उगतो सूरज ढळतो सूरज

राजस्थानी कहाणी संग्र

उगतो सूरज

ढळतो सूरज

म्हारी निजर मायं....................

ओम मल्होत्रा री पैली कहाणी री पोथी म्है वाची ! नू वो लेखक है पण इणमे लेखण रै वास्ते घणो बिसांस अर धुन है । घणकरी कहाणिया जीवण है नियारा-नियारा श्रायामा नै छूवणवाळी लागै श्रर अेक उद्देश्यात्मक दीट रो दरसाव देवै । कई कहाणिया नू वे बोध अर नूंवे ट्रीटमेंट री सैन करै जिकै सू लागै के लेखक आज री कहाणी विधा सू चोखो तरिया पिछाण राखै। इणसू लेखक राजस्थानी री नूंवी कथा जातरा मे भेळो होयनै श्रागै वधसी! इग्यारह कहाणियां रो ओ संग्रह भात-भात रो सुवाद तो देवैला ई सागै-सागै जीवण रै कानी अेक सोचण री रस्तो भी देवै । जुग बोध सू जुड़ियोड़ी अे कहाणिया भासा री कई कम्या रै पछै भी सरावण जोग है अर म्हानै खुले हियै सूं लेखक रा मगर थपावणा चाईजै [illegible] [illegible]भी सातरी कहाणिया [illegible] वधोनरी करै ।

आपरी बात

तळवार रो धणी बांकुरो....अर कलम रो धणी लेखक! दोनां री एकहीज लड़ाई. .. सरीसो जेहाद-क्रूरता रो खातमों अर सोंयति रो थापना....जठे मिनख-मिनख ने नावें....भाईचारो वापरे ।

लेखक री आंख कैमरे री आर हांवे । जोसो देखे....बोसोहीज छाप नाखे ।....कदेई तो नागेपणे रो चित्राम करतां बी वींरो हाथ को धूजेनी....लेखन री सफलता ईनेहीज कैय सको ।

समाज री कुप्रथावां....ऊच-नीच रा भेदभाव....घर-परवार रा संघर्ष....गमियोड़े ने पावण रो लालसा....अर साच्चे प्रेम री तडफ....ऐईज विर्द रैया है म्हारे सोच रा ।. . सोच रे कागद माथे विचारां रा आखर कद सूं मडणा सरू होया को कैय सकूं नी. पण अबे तो जिया माणस रो भूख ने सांयत करण रो नुस्खो है लेखण !

इये गुटके मांय भात-भांत रा मिश्रण करया है....पण ईरो सुवाद कोसोक रैयो....ईरो फैसलो तो भाषा-शास्त्रियां अर साहित्य-साधकां माथे छोड़ूं पण इत्तो विस्वास है के मायड़ भाषा रे पाठकां ने ओ जरूर सुहासी ।

गळत्यां सारू छिमायाचना करतां ओ साहित्य-सुमन मां-भारती रे चरणां माथे अरपित करूं ।

होळी, २१ मार्च, १९८९

□ ओम मल्होत्रा
"कुसुमाकर"

ठिकाणो :
आकाशवाणी केन्द्र,
बीकानेर-३३४००१
(राजस्थान)

मिणका

नागफणी

'हम्मे वोलो....थाणो काई विचार है ? थाणी बोलती क्यूं बद होयगी ?? कीसी तारीक पक्की कररिया हो कैवो नी ???"

'नी....नी... । इया किया होय सके?"

"भायडा ! क्यू कोनी होय सके ?....प्रतख ने परमाण री कांई जरूत ?....थें जिको विचारो....काई वीसोईज होवणो जरूरी है कांई ?.... यथारथ अर कळपणा कदेई भेला होया....?"

"गर थें चावो के धरती अर अकास रे बीचोबीच कोई नूवों मारग वण जावे... जिके माथे ऊभा होयर थें कळपणा रूपो अकास रा चांद-त्यारा तो छूय सको...अर ऊपर सूं थेंईज वोने अगूठो दिखावता रेंवो....तो कमसूंकम आ वात ई दुणिया माय तो कदेई पूरी को होय सकेनी ।"

विचारा री रेळ-पेळ हिवड़े मांय उथळ-पुथल मचाय रैयो ही, इत्ते मायं हवा रा धमीडा वाडा माथे आय लागा । म्हे चौंकता वांडे नि[illegible]र या[illegible] [illegible]णी स्यात....भटकरता उठू अर [illegible]नी कीसाक भतूळ उठ रैया [illegible] रा भारी माटा

ढिबड़े माय मचोट उपाड़ण लागे।
कदैई सोचू....इये वेटगी मेड़ माथे चाल पडूं....नीके म्
नो म्याति रा मान्न हीज जूण री गुड़मगुड़ गांठ्यां ने सावळ
माय समरथ होय मके।
पण वर्देईज धरमेळ रे रूप माय म्याति री मेड़ री रखा
करताईज कंपकपीजण लागू।.. कठै इयो नी होय जावे के सा
सम्प आंधे कूवे री निरदयी भीतां सू माथो फोड़-फोड़ आतमघा
करनी पड़े।

वोइज मानस रो द्वन्द्व म्हाने एकर फेर लारला बर
माथे दिरस्टी नाखण ने विवस करण लागे।....याके इयां कैवण
जचसी के वो लारला वरसा रो टैम इज आपरे माथे दिरस्टीपात
करावण खातर म्हाने विवस करण लाग्यो है।

।

दफ्तर रो चौकीदार रामू आयर कैयो-
"वाबूजी। भळे ठैरसो काई? छऊ वजण ने आया है।"
"काई कैयो....छऊ वजण ने आया है?" म्है चौकीजतां घ
म्हानी निजर नाखी। घड़ी रा दोनू सूवा आपरे ढीगेपणे रं
पूरोमपूरो फायदो उठाय रैया हा।
"अरे रामू काका! आज तो काम निपटावता वखत रो पतोईज
को लाग्योनी....अवार चकू म्हारी डिपटी तो खतम हुवी अर थारी मरू। थाने वी तो दफ्तर
बंद करणो होवेला?"
'काई कैवो थे वाबूजी।....अवार मू दपतर बद....?' साडी
ंनो तो थें मेमसाव को उठेनी....म्है तो वीने रोजीना कैवू

वचियोड़ो काम हमे काम करया.. जद जार कठै वा आपरी रसी छोडे ।"

रामू काके रे सबदां सू म्है फेर चोक्योज्यो -

'अरे की मेमसाब री वात करे है तू .. .?"

"वाईज तो बाबूजी.. मीनाकसी बाईसा । लेय-देयर अठै एक न्याईज तो काम करे. वीनेदी को जाणो नी ?" रामू काके आपरी वात मम राखी—"पण बावूजी....है तो वा सासात देवी रो रूप ।" रामू आपरो मूंडो म्हारे काना खनी करता धीमे सू जेया राज री वात बतळाई—"की सू राड–रपट नी झगड़ो-पसाद ी....। कीरो लेणो नी. ..कीरां देणो नी । दिनुगे आर कुरसी माथे ठे तो सिभया छऊ–साढी–छऊ सू पैली को उठेनी ।. ..इत्तो काम रे रोजीना ।" आपरा दोनू हाथा सू काम ने जिया नापतां रामू ताया ।

"काका ! वीएमे आईज तो एक कमी है....के वा की वोले कोनी । वीरे अणवोलेपण रो फायदो दूजा भाई लोग उठावे—वीने आप–आपरो काम थमाय'र ....चोखो भाईड़ा....म्है तो चाल्यां ।" कैवता म्है आपरे कमरिये सू निकळ्यो ।

वीरे कमरिये रे नेड़े सू टुरता म्है एक निजर माईने नाखी । वा अवार तक मेज माथे नगटी झुकाए आपरे काम माय जिया गमियोड़ी ही । म्हारा पग बरवस थमग्या । —"अरे थें अवार तक काम करो! ....छऊ सूं उपर हो यग्या....घरे जावणो कोनी कांई ? ....रामू वो कैयरियो हो के....थें रोजीना घणी ताळ काम करती रैवो हो....हमे चालो....उठो नी....काम-धाम वद वी तो करो....।" म्हारी वात पूरी होवण सूं पैला विये आपरा लब खोल्या—"म्हैं खुद जासूं परी ।"

वीरे लूखे वोळ सूं जिया म्हारी वोलतीईज वद होयगी ।

ुबाहर म्हारी चिगिया काळता दीसता रैया ।

□

म्है अक्सर वीरे बारे माय ईंज सोचतो रैवतो ।

"आ छोरी दूजी छोरयां भांत बड़बोली क्यूं को दीसेनी ?"

"एकलपणे रो माळ क्यूं ओढ राखी है मीनाक्षी ?"

"काम सूं भारी मरनो जा कांई रो प्रतिरोध क्यूं को करेनी?"

"कदैई आ आपरे माय री रीस रो बदळो घणो काम कर'र ो को चुकाय रैयी नी ?"

"पण क्यूं ?"

"ईंयां क्यूं ?"

ईंयां घणाईज प्रश्न म्हारे होय माय उफणता अर पाणी रे बुलबुलै भांत बिना पडूत्तर दियाईज फूट जावता ।

□

दफ्तर रे सगी-साथ्यां माय हंसी-मजाक अर ताना-छींटाकशी रो सदाईज चालतो रैवे । म्है सगळा न्यारा-न्यारा सैक्सनां माय बंटियोड़ा होवण रे बावजूद फुरसत रे टैम एक-दूजे खने जाय बैठता अर अठीने-उठीने री हांकता रैवता । ... पण वा मीनाक्षी बाई तो जियां एकलपणे री देवी ही एक खूणे माय आपरी कुरसी माथे हमेस चिपक्योड़ी रवती जियां भींत माथे कोई गिलैरी जियां के छूई-मुई री कोई बेल होवे जिको किणरे हाथ रे इस्पर्श मात्र सूं हीज भिटीजजामी ... या के एकळपणे रे ताळ माय बैवती कोई ऐकली नाव होवे जिकेने केवटिये रे बिना हीज किनारे जाय पूगण री विस्वास होवे ।

कदैई कदैई तो म्हाने वींरो चुप्पोपण आपरे चारूं खानी सीरळ चादणी बरसांवतो सो लागे....पण लाख जतन करण रे उपरांत वी म्हैं वीं चादणी ने हासल को कर सक्योनी । छोटी

"म्हारो मानो मीनाक्षी जी ! . थे थांरो सा
दफ्तर मायईज जाय दो । काल ठीक करवाय लेसां जद
म्हांळो म्हारो सोंगो खोलसो । ... आवो म्है थानें
छोडियाऊं ।"

हियड़ै मांय विचार उठ रैया हा के
तो म्हारो सायकल नेईज फिरतारथ ..

"नी सा....म्हैं ठीक हूं.... इयूंज पू
मीनाक्षी रा बेधड़क बोल जियां
पस्त कर दियो होवे । म्हाने लाग्यो
एक लैण चौराए माथे ऊभे टिरेर्
म्हारे सगळा संभावित प्रश्नां ने
म्है बीने देख्यां बिना डावड़े मा

वियां म्हैं आर मानी मूं कोई कसर छोडी को ही नी। मीनाक्षी रो धीर-गभीर सुभाव पतो नी म्हाने क्यूंकर आप खनी गेंचण लाग्यो। अर इये आकरसण रे फळस्वरूप हीज म्हैं बीरे बाबत सगळी जाणकारी हासल कर लीनी ही। म्हारे हिवडे रे राग्ने माथे या एक गरीफ मैंनती अर लगणसील छोरी ही ... अर फेर सायत रैवणआली छोरया तो लाखा माय एक आधीज लाग- आखरकार म्हैं आपरे मन ने दिलासो देवतो।

□

जात्रा सू पूठा आवता वखत जद पूछो-पूछ सूं मालम पडयो के मारतो सीट माथे बैठी लुगाई मीनाक्षी रो वडी बैन है, वी वखत म्हारी खुसी रो पारोवार को रैयो नीं। म्है छूटताईज कैयो —

"म्हारो परीचै तो इतोइज घणो के म्है अर थारी बैन मीनाक्षी जी एकईज दफ्तर माय काम करा हा।"

म्हारे इये बोल सू वा घणी खुस हुई। अर कैवण लागी— "थे तो घरराईज मिनख निकळया।"

नासा मामू सास री धार पूठी बगावता म्हारे मूं डे सू निकळयो—"एक थे हो जिका म्हारे सरिसे अजाण ने वी 'घरराईज मिनख" जीसो सन्माण देय रिया हो अर एक आपरी मीनाक्षी बैनजी है जिका पणे अरसे सू सागै काम करण रे बावजूद खुद माय परायेपण रो अहसास सिमटाए राख्यो है।"

□

वी सिञ्झया म्है घणो खुस हो। सी वी घणो पड़ रैयो हो पण सियाळे री पून री लैरा रा थपेड़ा दी जिया म्हारे गाला माथे मोरपाग सूं हवा कर रिया लागता हा। ध्यान वठै म्हारीज

सो पडतर देय'र वा खुद ने बचाय जावण री कळां मांय जि
घणी सयाणी ही ।

[

नूवे वरस रो पैल्डो दिन हो वो । दफ्तर माय पुगताईज रू
पैली यार-भायलां-साथ्या माय वधा यां अर मंगल कामनावां रो
ब्योपार चाल रियो हो । औपचारिक रूप सूं वीने करियोड़ो
म्हारो परनाम म्हा खानी पूठो आयग्यो हो । पण वीरे मुळकी
माथे मुळक री एक रेख तो परने रैयगी वोये आपरे नैणा रो
चिलमण उठाय तक म्हाने को देख्यो नी.... कठे ईये डर सूं तो नीं
के वीरे नैणा री चिलमण रे ऊंचो होवताईज वीरी आंख्यां मांय
झांक'र कोई मांयलो राज नी भण लेवे....जाण लेवे ।

बी बखत म्हानै ईसो लाग्यो जिया के बठै ऊभा सगळा प्राणी तो
कोई जंगळ री एक सरीसी सपदा होवे अर विया सगळां सूं न्यारो
अजूबो कोई रूप है तो वो है- मीनाक्षी रो . नागफणी सरीसो।
नागफणी जीसोईज तो.... जिको आपरा समूचा विषाद आपरे
मांय छिपायोड़ा राखणो चावे .. पण वीरा विषाद बीसूं छिपीज
सके कोयनी.... अर काटा बण-बण'र वीरे वारे उगता जावे ।
ईसाईज....एकळपणे रा काटा म्हानै मीनाक्षी रे शरीर माथे बी
उगता लागण लाग्या ।

□

नोकरी लागण रे पछे मां रोजीनाईज लाड-प्यार सूं
चुपड़योड़ी मनुआर पुरोसतो—

"बेटा ! ... हमें तो बीदणी लेयआव रे । ...थारी अर म्हारी
दोयां री सेवा करसी ।"

पण म्है मा ने समझाय-बुझाय'र जियां-कियां टाळ जांवतो ।

'थोड़ो धीरज तो राखो....म्हैं नी थाने इस्पष्ट बताय देवणो चावू के.... म्है कुंवारी को हू नी . . म्हैं. . ."

'तो काई थे परनीज्योड़ी हो ?' भट करता म्हारे मूं डे मूं निकळयो जिको म्है हागा माय कंय दियो।

"नई मा... म्है परनीज्योड़ी कदेई ही। ईएा खातर तो म्है थाने कंयू हू के पैली म्हारी बात सुण लेवो। ... म्हारो व्याव होय चुक्यो है... अर हमे नातो टूट वी चुक्यो है। हमे म्है तलाक-शुदा हू.... म्हारो एक टाबर वी है जिको आपरे बाप खनी है।" कंवता मीनाक्षी थोडी ताळ ठैरी। फेर बोली— हमे कैवो.
"व्याव री किसी तारीक नै कर रिया हो ?"

इत्तो कं र वा म्हारे मूं डे खानी देखण लागी।

म्हाने तो जिया काठ हीज मारग्यो। मीनाक्षी रा एक-एक बोल जिया म्हारे काळजे माथे मरा–मण रा डगळ पडता लाग्या। ईसो तो म्है कदेईज को सोच्यो नी। म्हारी चुप्पी माथे हमे बीरा प्रश्न लगोलग चोट कररा लाग्या—

'कैवो....हमे थारो काई विचार है ?....

"क्यो चुप होयग्या थे ??....

"कीसी तारीक तैं कर रिया हो कैवो नी ???"

म्है भट करतो उठियो अर साळ खानी नाठयो जठै मीनाक्षी री बडी बैन म्हारे फैसले री परतीखा करती बैठी ही। बैन जो बी बीरै तलाकशुदा होवरा री बात ने पुख्ता कर दी।

म्हारी आख्या रे सामे जिया अधेरो छावण लाग्यो। विया दोनू बैना री की बात रो पडुत्तर दिये विना ईज म्है पूठो आयग्यो। 'तलाक शुदा सबद रे आखरा रा तीर पतो नी म्हारे सरीर माय कित्ताक ऊंडा धसग्या हा के म्हारे सोचरा-समभरा री सगति हीज

परतीसा हो रैयी ही। मीनाक्षी री बैनजी वांडे माथै म्हारो सुवा
करयो। मान-सम्माण सूं मांय बैठायो।

मीनाक्षी माथो हेठे कर बैठी ही.... माटी री मूरत है
जिसी....एकदम चुपचाप.... हमेस जिया। म्हैं बोलणो चाव रिः
हो पण जिभा आखर ओंठा तक आवता-आवता अटकीज जावता
थोड़ी ताळ सन्नाटो छायो रैयो।

अचानक बियेहीज चुप्पी रो बाध तोड़यो—

"थैं जाणो हो के म्हा दोयां नै अठै बैन एकलो क्यो छोड
है ?"

"न....न....नई तो।" म्हैं जाणबूझता अणजाण बणण
कोसिस करी।

"....ई खातर के....के आपां दोनूं....सोच-विचार कर लेवां।

'म्हैं तो सो कांई सोच लियो ... म्हानै थारे बाबत सगः
मालम है.... थेहीज कांई म्हारे बाबत जाणणो-बूझणो चावो
....म्है कैयो।

"थाने म्हारे बाबत कांई मालम कोनी। ईण खातर तो
आपां ने ऐकलो छोडयो है .... साफ अर इस्पष्ट कैवण-सुण
खातर....। थैं स्यात को जाणो नी के.... के .... म्है .... म्है।"
बा आपरी बात पूरी को कर सकी नी। म्है सोच्यो के बीरे
मांय बी घणी खुसी रो समुन्दर लैरा मार रियो है। स्यात
वास्ते हीज बीरा कंठां मांसू बोल को फूटरिया नी।

म्है बीने फेर धीरज बंधावतां कैयो—"म्है थारे बाबत पूरी
खोज-खबर राखू हूं, सो थाने खुदरे बारे बतावण री जरूत
कोनी....रैयी म्हारे बाबत....थै जिको चावो पूछ सको।.... म्है तो
चावूं के ब्यांव री तारीक वेगीईज तै कर ली जावे।" म्है एकहीज
सांस माय सै मन री बात उगळ दी।

दीये री बाती

"आज दीया कोनी जलावणा काई ?"

म्हैं बैठताई पूछ्यो।

म्हारो सवाळ बीरे मूं डे मूं टकरार पूठो आयग्यो ज्यूं तळवार वार ने ढाल निस्तेज कर दीनो।

रामेसरी री चुप्पी मनें सुआई कोनी। म्हैं बीने फेर झंझोड्यो—

'काई बात है रामेसरी ! इयां कियां मूं डो बिगाड राख्यो ? तू किण बातां माय गुम्योड़ी है ?'

अबार ताई बा ज्यूं निरजीव सी बैठी ही। म्हारे सवाळां री बरखा सूं बा जियां सूवती जागी -

"अरे परकास बाबू !... कद आया थे ?"

म्हैं हासण लाग्यो। पतो नी काई-काई पूछग्यो म्हैं अर रामेसरी ने म्हारे आवण री बी खबर ई कोनी। म्है फेर बोल्यो—

'आज दीवाळी है। थोड़ी बारै झांक र तो देख,घरां री भींतां माथै जगमग-जगमग करता दीयारी माळावां कीकी फूटरी-फूटरी लाग रेई है। च्यारूं-कानी उजाळो ई उजाळो हो रियो है। हरेक दीये री रोसणी रामराज री बधाई आपरे माय छिपाये हिवडे ने

होनी पड़गा । तिरस्कार-अविमुक्त गो राग रो पगरा माथे ऊंची धार पड़ग्यो ।

इसे एक गाजी म्हारे जिवड़े साथ सौगार्थी ने पाथण मा हजारो-हजार गुणना हा जिका फूल-रूप'र दर्शाव्या पेश कर रि हा के—"थीने गळे लगाय ने तलाकशुदा मानणो कोई विडम्ब को होवे नी ।'

पण थीरे तलाकशुदा होवण री बात म्हारे गळे सूं हेठे उतरेनी ।

स्यात ओ नतीजो म्हारी भावनावा रो एकाएक भटके म किरचा-किरचा होवण रो हो । म्हारो पुरुषत्व कोई अण कळी री कळपणा करी ही....म्हे किण गण्डर सू परीने छिटकर्य ईंटाड़ी ने आपरे प्यार रे ताजमैल री नींव माय चिणावरा कदेईज सोची को ही नी ।

फेर बी माय सू ऐ प्रतिध्वन्या उठ रेई है के थारे ताजमैल नींव मांय लागी आ पुराणकी ईंटाड़ी होज थारे प्यार ने शाश्वत परदान करसी....ईंमेमाय कोई शक कोयनी ।

म्हाने लागरियो है के म्हे एक ईसे जागळ माय ऊभो हूं जठे दूर-दूर तक नागफणी रे बूटा रे अळावा भळे कोई वनस्प नी है । थोड़ी ताळ पैला जठे म्हारी कळपणा मांय नागफणी म फूल उगग्या हा....वे सगळा रा सगळा छिण भर मांय मुरझाय है या के....झड़ग्या है....अर नागफणी रो हरेक काटो म्हारो ने जख्मी कर देवणो चावे ।

□□

रामेसरी जिया नोटाँ रा गुटका कठा माय उतारया । छिण भर बा ठैरी....फेर आपरी बात शरू राखी — "बियां ने हरेक दाव माथे इयां लागतो रियो जिया अबका वे जरूर-बर-जरूर जीतेला .... पण भाग्य माथ .. जद वे उठिया जगे बिया रा दोनूं हाथ खाली हा ... घर बीयारे गामेही टोळी रा सगळा भाग–भायला बियारी जीवणभर री सगळी कमाई बटोरण माय लाग्या हा ।"

कंवता-कंवता जिया रामेसरी फेर कठे गुमण सी लागी । मनें लाग्यो जिया बीरे हिवड़ माय लारली सगळी घटनावां री एक चलचित्र सो चाल रियो है । बारे अ रे माय आस्या गड़ावतां बिये फेर मूंडो खोल्यो --

"इत्ती बडी हार बियां पैला कोनी देखी ही । अबे बैं की मूंडे सू मा ने बतलावता के. आ मकान अबे बियां री कोनी रियो .... बीरे सुहाग रो निशाण मगळसूत्र माथे वो अबे की दूजे रो अधिकार होयग्यो.... ओईज सोच-समझ'र बै घरे पूठा को आया नी...."

म्हैं रामेसरी कानी देख्यो बीरे नैणा माय आंसुवां रा टपका टपोटर चू रिया हा । मनें लाग्यो जिया रामेसरी रे नैणा माय सूं नी म्हारे खुद रे नैणा माऊ सू ऐ आसूड़ा टपक रिया है । अर गर ईयां आसुड़ा ने नी रोक्यो ग्यो तो हारोड़े जुआरी री सगळी पूंजी री तरा बैं'र खलास होय जासी ।

"घणो होयो रामेश्वरी....घणो होयो । हमे गम खाव । थारा आंसू म्हासूं अबे देख्या जावे कोनी ।" कंवतां म्है वो अधीर होवण लाग्यो, । पण म्रो बखत धीरज खोवण रो कोनी हो धीरज राखण रो अर धीरज दीलावण रो हो । म्है मुसकिळ सूं खुद ने बस मांय कीनो अर बोल्यो– "बीतोड़े ने बदताई ओळू कर

कितो मुग देवे है....अर एक नू है ...ना दीयो–वाती घरां मांय करीयो है अर ना वारे । वोईज एक चाळीग वाट रो रोसनी रो लाट्ट थारी साळ री दासतान आज वी केरियो है ।"

"जीने गुदरी सोज–खबर कोनी वीने दीवाळी री खबर कियां होसी परकास वावू । जीरे हिवडे माय अंदेरो होवे वीरे-वारे उजाळो करनो काई काम रो ? म्हारो तो ओईज जीवणो है।"

मने वीरा वोल आखर दर–आखर भारी लागण लागा। म्है वीरे मू डे माथे आया भावा नें पढणो चायो । इयो लाग्यो जियाँ कोई दीये री वाती आंदया रे थपेड़ा सू जूझतो थाकगी होवे....अर वो टैम दूर कोनी जद आ वाती "भप्प" करती एकोएक बुझ जासी । ई भारी वातावरण माय म्हारो हिवड़ो बी भारी होवण लाग्यो ।

"म्हारी दीवाळी तो जदेईज सूनी होयगी हो जद काकोसा ओ घरछोडर टुरग्या हा । थाने ओळू होवेला परकास वावू....कोई दीवाळी नीं चूकती ही जदे बियांरी टोळी नी भेळी होवती, जिकी रात ने देर तांई चालती रैवती....अर वी माय सो दोय सो रूपिया हारणा तो नानी वात ही । जूऐ री बाजी माय हर कोई जीत सके कोनी । एक जीतेलो तो दूजेरी हार निसचित है–ई वातां ने जाणतां–बूझता पतो नी वै क्यूं अणजाण बण जावता । हरेक दांव माय वै जीतता थोड़ा हा अर हारता घणा हा । एकर वै जीत्या बी हा....घणासारा रूपिया....ई जीत सूं आगली दीवाळी माथे बियां रो जूऐ सू परेम घणो बढग्यो '....अर वो दिन....वै दांव माथे दांव लगावता रिया....दस....वीस....पचास....सौ तांई वात खतम को होईनी....हजारां तांई पुगता रैया वै....अर आखर मांय....मां रा गैणा–गट्टा अर रैवण रो एकलो मकान वी दांव माथे लगावण सूं बै चूक्या कोनी ।"

होवे है.... अर हमे आखर माय नू दम तोड़ देवें।
चोखी को लागे नी ।"

म्हैं देख्यो- रामेसरी रे मूंडे माथे मुळक री रेख उतरण लागी है। म्हैं धीरे गालां माथे ढळक्योड़ा आंसू पोंछ दीना ।

"परवास थे हरमेस म्हाने मुसीबतां सूं उबारयो है.... साहस रो पाठ पढ़ार ... दोये री भात ... थांरे बिना म्हारो जीवणो दीसतो कोनी हो ।" रामेसरी जिया अतस री बात मूंडे माथे लेय आई ।

रामेसरी रा बोल पतो नी म्हार अतस माय किता ऊंडा उतरया के म्हारे ओठा में वो हिवड़े री धड़कण वारे आयगो—

"तो रामेसरी दीवाळो र ई बगत माथे म्हैं थां थासूं कांई मांगू तो तूं देसी ?"

पतो नी कठेसूं म्हार माय इत्ती साहस आयगो हो के बिना बात म्हैं रामेसरी ने बरसां सूं था थंय मसरा नीं वाईज बात एकोएक धीरे सामे धर दी। म्हैं रामेसरी स्यानी इया देखण लाग्यो जिया के रामेसरी आपरो फैसळो सुणायर म्हारी हवेली मोन्दा- रतनो सूं भर देसी ।

"साग'र तो देखो परवास बाबू । ...थारे पइसाना रो बोल तो म्हैं आपरो सगळो लुटायर बी नी चुकाय सकूंनी ... ई जनम माय ही नी... आगला सगळा जनमा माय बी ।" इत्तो कैवतांई रामेसरी नीचो नग कर धरती स्यानी देखण लागी ।

रामेसरी रे हकारे सूं म्हारे हिवड़े माय जिया एक खुसी री लैर ई दग सूं सपटी के एक गटक रो भाव उतरण लाग्यो —

"तो पछे आव रामेसरी .... आज सूं आपां दोनूं एक होय जावां.... । म्हैं थारो रो दीवो ? ... अर सूं है दीवे री बाती । ....

रोवती रैंसी रामेसरी ? दीवाळी थाने गम दिया है तो कांई होयो ...दीवाळी इज थाने जीवण रो मम्बळ वी तो दीनो है। ... थाने ओळू हवेला . टोंगरसणे गांव दीवाळी रे दिन ग्रायां दोनूं आप-आपरे घरां माय दीया जळार बारे ग्रा जावता हा ग्रर सगळी गळी रे बांडा रे बारे रास्या दीयारां री रख्या करणो ग्रापांरो काम होवतो । किसो दीयो बुझायो है . ग्रर किण मांय तेल खलारा होवण ने है . देखर म्हैं दीये ने पूठो जळावतो हो ग्रर तूं थारी हथेळियां सूं दीये ने ढकर तेज चालतां हवा सूं वचावती ही :.... म्हैं बुझयोड़ा दीया भेळा करतो हो ग्रर तूं दीये सूं दीयो जळार सगळा दीयावां ने फेर जळाय देवती ही ।"

म्हैं रामेसरी रे कांधे माथे हाथ धरतां कंयो–

"एकर दोयावां री टिमटिमाट ने देखर तूं म्हा सूं पूछयो हो-परकास इयो लागे है जिया ऐ दीया कांई कैवण लाग रिया है। कांई कैवणो चावे है ऐ दीया ? अर म्हैं कयो हो- ऐ माटी रा दीया ग्रापांने सदेस देवे है के जियां म्हैं इत्ती तेज हवा मांय वी जळ रिया हां वोयाईज थे वो संकट रे तूफाना सूं ना घबराया अर सतपथ माथे चालता रैंया । जियां म्हैं अंधेरे मांय वी रैर दूजा ने परकासित करां हां थे बी कस्ट उठार दूजां री भलाई करो ग्रर अंधेरे जीसी बुरायां ने परकास जीसी अछायां सू दूर करो.... अर वीघड़ी आपां दोनू ईसोईज करण खातर परतिज्ञा लीनो ही।"

म्हैं रामेसरी रे कांधे ने झाल्यां आपरी बात चालू राखी "दीयां री ओइज सदेस थाने मुसीवतां ग्रर कठिनायां रे धोरां माथे चालता- ई जगा लेय आया है के तूं ग्राज आपरे पगां माथे ऊभी है....। काकोसा रे पूठो नीं आवण सूं उजड़ती गिरस्ती ने तूं हीज तो आपरो कांदे री सारो दीयो है.... ई बात ने सोचर कितो गरब

आंचळ

"दादी मा !....श्राज काई बात है....घरा कोई पावणो श्रावे है के....इत्ती तैयारिया होवे है ।" हळवाई भात-भात री मिठाया बणायरियो हो. .दरजी नूवा कपडा सिळरियो हो....भीता माथे रगरगीळी बीजळी री लडया टागीज रैई ही । चौतरफा तैयारियां ने देख'र नान्हे राजू श्रापरी दादी मा सू पूछ्यो ।

"हां बेटा ।....थारी मा आय रैयी है ।" दादी मा समझायो पण राजू विस्मय सूं फेर पूछ्यो—"काई कयो दादी मा ?. . म्हारी मा आय रैयी है ?"

"हां जदेई तो ऐ इत्ता कामधाम होय रिया है । थाने मीठो घणो भावे है नी तू खासी ? नूवा गाबा भी तैयार हो रिया है. तू पैरसी ?" दादी मा चीमू पूछ्यो ।

पण राजू रो नान्हो मन तो जिया दादी मा री बात्यां सूं परिने काई गूढ बिचारा माय गमियोडो हो । बिये सोचता कैयो—

"पण दादी मा ! म्हारी मा तो घणो पैलाई कठै गई परी ही ।....थाने मोळू है....दादी मा ! थेंहीज तो एकर कयो हो—अबे म्हारी मां फेर पूठी को श्रावेलीनी ।.... बानो हमेस वास्ते घणी दूर....ई दुनिया सूं दूर भगवानजी कने गई परी है ।"

थारे बिना म्हारो काई महत्त कोयनी । जद तांई थारा सगळा दुख दरद म्हैं सुद नी पीय लूं.... अर थांगे पन्नो गुसी .... प्यार अर सुख सूं नीं भर दूं ....तद तक म्हाने स्याति को मिलैलोनो।'

रामेसरी म्हा थानी देखण लागी । वीने खुदरे सुणे मां जियां विसवास को होय रैयो नी । मने लाग्यो जियां तेज हवा रे थपेडा सूं जूझती दीये री बाती ने कोई दोय हाथां री छतरी रो सायरो मिल गयो है....अर बा हमे पूरे जोसखरोस सूं पाछी जगण लागी है।

म्हैं के रियो हो— "आज आपां दोनू ई घर ने सजावां दीयां रे परकास सूं । .... तू दीया जळाव अर म्हे आपरी हथेळियां सूं दीयाने ढाप लेयसूं.... हवा रे तेज झौका सूं बचावण खातर।"

म्हां दोना रे नैणा भाय सूं आसू रा मोती अनवरत रूप सूं वैवतां-वेवता कैयरिया हा- "जीवण बुझण खातर कोनी जळण खातर है .... ताके परकास सूं दूर होय सके जीवण रो अंधेरो।

□□□

अर गाळया री विरखा ! रवि बापड़ो । मा री मार मेलतो रैयो । रण विये मूंडे सूं को गोल्यो नीं ।

"तू थोने बधू नी रे हरामजादा ..म्हारी मौत रा जायोडा ! सगळे दिन गोधां जिया रूळतो फिरे अठीने-ऊठीने, आवे जिको ईज गटका जावे. ..अर काम रे नाव माथे थारा होस गम जावे .? म्हारो बस चाले तो...."

रवि री मा रो विरोध बादळा माय बीजळी ज्यूं चमकतो रैयो—

"बता थू सगळे दिन काई करयो ?" मा रो ताव देख'र रवि थरथरीजण लाग्यो । विये काई कैवणो चायो पण डरता वीरे गळा सू आवाजईज को निकसी नी—'म... मा.. ' इत्तो ईज कैय पायो रवि । पण ओ काई . दोय-चार भळ पडी वीरे ।

"खबरदार जो मने मा कयो थू . हू थारी मा कोयनी । आच्छी तरा समझले ! अर ना ही थू म्हारो बेटो है.. म्हैं थारी मौसळ मा हू ।. काई सुणयो ? फेर मने मा कयो तो जिंदोईज बूर देवू ला ।... हमे उभो-ऊभो काई करे. ? वेगोसी झाड़ू लगाव... बासण माज.. पाणी भरलाव. "

रवि री मा रो ईसो बुरो बरताव देख'र राजू समूचो धूजण लाग्यो । वो पूठ पगा आपरे घरा नाठ्यो । रवि री ठुकाई रो दरस वीरी आख्या आगे घूमण लाग्यो । वो सोच माय पड़ग्यो "कित्ती दोराई सू मारे है रवि री मा रवि ने । वो घर रो सगळो काम करे है पण फेरहीज वीरी मा आईज कैवे है के विये कोई काम को करयो नी बापडे ने कोसू रमणईज को देवे नी । .... आ कोसी मा है वीरी .... काई मा वो ईसी होवे. जिको लाडले टाबरा ने ई बेदरदी सू ठोके ? नी नी .... मा ईसी को होय सकेनी.... । वा रवि री मा को होवेलीनी"

"ए"....दादी मां नान्हे राजू री बडी वातयां सूं चौंकी
जिय। । वा इचरज सूं राजू रे भोळे मूंडे मानो देखग लाः
जिको आज सूं दो बरस पैला आपरी मां री ममता सूं हके
मानर म्यारो होयग्यो हो । दादी मां री आंख्या सूं आंसू टपक
लाग्या । विये भटकरतां राजू ने आपरे हिवड़े सूं लगाय लीवे।

'दादी मां !....थें रोवो क्यूं हो ?....थें म्हारी वात रे
पडूतर को दियो नी ।" थोडी ताळ सोच'र राजू कैयो—'हैं
समझग्यो के थें क्यों रोवो हो । म्हारी मा सूं थाने घणो लाड हो
खातर....मने माफी देय दो दादी मा ।....म्हैं आइन्दा ईसी वा
पूछ'र थाने दुखी को कर लोनी ।"

"हां वेटा ।... म्हाने थारी मा सूं घणो लाड हो अर वीने
तो थासू घणो लाड हो....पण हमे घणो सोचण सूं की नी वणे
... तूं दुखी मतीन हो.... म्हैं थारे वास्ते दूजी मां लाय रियां हां।
वा थाने घणो लाड लडावेली ।" कैवतां दादीमां आपरा आंसू
पोंछ लिया ।

"साची दादी मा !....दूजोडी मां म्हाने घणो लाड
करसी ?"

'हां वेटा !....वीसो हीज लाड करसी जीसो थारी पैलड़ी मा
करती ही ।" दादी मां राजू रे गाल माथे परेम सूं एक चपत
लगावता कैयो ।

नान्हे राजू रे मन मांय खुसी रा भाव उपजण लाग्यां । आज
वीने फेर आपरी मां रो नेह अर लाड पावण री आसा बंधगी ही।

☐

रवि रे घरां पूगतां हीज राजू रा पग बाडे हीज ठिठकग्या ।
विये देख्यो—रवि री मां रवि री ठोकाई कर रैई है । झापड़–मुक्का

पावणा री गहमागहमी मूं नीदड़लो राजू ने आपरे हीडे मू नीचे उतार'र पतो नीं कठे लुकगो। राज़ आल्या खोली तो सामे दादीमा ऊभी ही। राजू पँनीपोत तो दादीमा ने देखर होळे से मुळक्यो पछे ए आमो होजता बोल्यो — "हू को बालूं नी थासू दादी मा!"

"क्यू रे...म्हारा राजा बेटा . रीसाणो होयग्यो काई म्हासूं ?" दादी मा धीरे माथे पर हाथ फेरता कयो।

"तूं रात बे म्हाने ऐकलो छोड'र कठे गई परी ही ?" राजू आपरो मूंडो फुलावता कयो।

"अरे थाने तो ठाईज कोनी ?..हू तो गयोडी ही थारी नू वी मा ने लावण खातर"..दादी मा बीने समझावण री कोसिस करी।

"नू वी मा ?"

नू वी मा रो नाव लेवता हीज राजू रो मूडो फक पड ग्यो। बीने फेर नू वी मा री याद आई- रवि री दूजण मा! ...सुफना माय दीसी बीरी खुदरी नू वी मा!....राजू रो लीलाड परसीने सू तरवतर होग्यो।

"काई होयो राजू बेटा....बोल तो सरी ?" दादी मा बीने खोळे उठाय लीयो।

दादी मा....वा. .बा....नू वी मा!..." राजू आपरे मन री भे दादी मा सामे परगट कर को सक्योनी।

'हा-हा....थारी नू वी मा आयगी है....तू मिलसी बी सू ?" दादी मा राजू रे मन री बात लखाये विना हीज केवती रैयी।

इत्ते माय राजू रा जीसा नू वी–नट बीनणी सू पल्लो-पल्लो बांधे माय आया। थोडी ताळ तो राजू रे डरियोड़े मूडे खानी देखता रैया फेर बोल्या—"उठ राजू बेटा!....देख थारी नू वी मा

सोचता-सोचता राजू नै मन मांय रवि री मां रा ‥
सुणीज्या— 'खबरदार जे म्हाने मां कयो। म्हैं थारी मां होनै
अर थू भी म्हारो बेटो कोयनी। म्हैं थारी सौतळ मां हूं 'दू
मा"....यानि के दूजोड़ी मा! हा दूजोड़ी मां होज!!...दू
मा रा विचार आवता होज राजू जियां सकपकायग्यो।
खुदरी बी तो दूजोड़ी मां आय रैयी है। कठै वा बी म्हाने
भांत होज कूटेली....ठोकेली....? जी लाड-प्यार नै पावण है
वो घणे दिनां सूं तरस रियो हो कांई बो लाड बीरी सौतळ
दूजोड़ी मा सूं बी को मिलेलो नी? सोच-सोच'र राजू की
भो सूं डरतो कंपकंपीजण लाग्यो।

"थूं म्हारो बेटो कोनी .... थूं म्हारो सौत रो बेटो है
थाने कदी लाड प्यार को करूं लूं नी। थू म्हारे घर रो सगळो
करसी.... पछे तने रोटी-बीजी देवूं ला .... नी तो .... नीतो
कैंवती वा राखसणी दाय आल्यां काड'र डरावण लागी
बीरी आंगळया रा बढियोड़ा तीखा नख राजू री नसडी रे ऐ
आवण लाग्या।

"नई-नई" री कूक सागे राजू सूवतो उठ बैठ्यो। वो धू
डरतो आंख्यां फाड़-फाड़े कमरिये रे चारू कूणा देखण ल
बीरी समझ माय को आयोनी के थोडी ताळ पैला सुफने
आयी सौतळ मां कठे गरे परी। पण सौतळ मां अठै-कठै हो
राजू आपरी दादी मां ने हेलो करयो पण दादी मा बी को अ
घरां मांय कोई हावतो तो आवतो...? समूचो परवार तो ग
हो राजू रो नूंवी मा ने लावण खातर। राजू आपरो
हथेळियां सूं ढक लियो अर रोवतां-रोवता फेर कद बीरी
लागगी बीने ठा को पड़योनी।

राजू ने एक अणदेख्यो... आनंद मिलग्यो हो....जियां वीने मसार री समूची खुसी मिलगी होवे।

आज वीने आपरी गमियोड़ी मां री ममता भळे मिलगी ही। वीये एक झटके सूं मोनळ मा रो विचार माथे मांय सूं काढ नाख्यो अर मां रे आंचळ मांय आपरो मूंडो लुकोय लियो।

□□□

आई है....नू वी मा.. .थारी मां । नूं मिळसी कोनी ईनूं ...आपां मां नू ?"

"राजू बेटा....नू वी मा रे पगां तो पड़ जा'र...." दादी बीने हेठे उतार दियो ।

राजू डरता-डरता आपरी निजरां ऊपर उठाई । पैली सीसा सामे....वै होळ -होळ मुळक रिया हा....फेर बिये नेड़े ऊ नू वी मा सामे....फूटरो मू डो....मुळकता ग्रोठ....चमकती आख्यां राते रग रो जगमगावतो वेस !....ममता रो अथा सागर जिण हिलोरां लेवतो हो !....जिया की मिंदर सू आयी साखात देवी रो मूरत....।

राजू एकटक आपरी निजरां नूं वी मां माथे टिकाय दीनी। राजू रे मन माय फेर विचार उठया–' कठे ग्रा थारी नूं वी मा बो रवि री दूजोड़ी मा.. सोतळ मां....या के रात ने सुफने मे आई डाकण मां....जियां तो कोनी ?''

राजू रे हिवड़े सूं एक हेलो उठयो– "गैलो होयग्यो काई राजू ....? आ थारी मा कुमाता को होय सकेनी....ग्रा तो साक्षात देवी है देवी !... " राजू एकर फेर आपरी निजरां नूं वी मां माथे टिकाय दीनी बीने लाग्यो- जियाँ बीरी पैलडी मा अर ई नूं वी मा मांय ग्रागळभर रो वी फरक कोय नी ।....बीने लाग्यो जिया बीरी असळी मा पूठी आयगो है ।

इत्तो माय नू वी मां आपरा दोनूं हा
मुळकता लाल गुलाबी ओठ खोल्या—"
म्हा खने.... रूसाणो होयग्यो कांई
"मां! ....मां! !....' राजू रे
अर बीरे मूंडे सूं निकळग्यो- "मा
छाती सूं जाय लाग्यो ।

पण घ्रासरी हालत मा'रे गम्म नी गावतो हो'रे पण वीने ई रिक्शे रो हालत माथे तो गम्म गारथोड़ी पड्यो। रिक्शो विये भाडे माथे लेय राख्यो हो ... अर गम वो देनो मजूरी रे लालच मांय रणो मथारया दौडावतो अर रिक्शो गाव कठे भाग-टूट होवती जद वीने रिक्शे रे मग्गी री मरी-मोटी मुरतणी रहती। अठ तक के गाड नी वो सोवत आय सके। अर राड सूं वो डरतो हो ...ईंरे गाड़ मूं बचण सातर तो विये घणी बार मूंडे मांग्यो हरजानो भरयो हो।

रिक्शेआळे रो पतूतर सुणे बिनाईज थाक्र मदारया धड-धडावती रिक्शे माथे जाय बठी अर रिक्शो होळे-होळे सिरकण लाग्यो।

थोडी ताळ पछे सेठ वीने फटकारयो — "ओ रिक्शाआळा क्यां किया कोडी री दाय चाल रियो है ?... जोरसूं चलाव।.... म्हाने वेगी पूगणो है ...शरीर माय दमखम नी है तो ओ धन्धो ईज क्यू करे है ?"

रामू रे जिया सगळे सरीर माय लाय लागगी। पण वो मान ईज रैयो। वीये सोचयो- 'पतो नी कित्ताक ईसा गिराक रोजीना आवे है जिका पतोनी काई-काई ऊटपटाग सा बकता रैवे। आखर किण-किण सूं राड मोल ली जावे ?" अर विये रिक्शे री रफतार वती कर दीनी।

जेठ-अमाड री चिळचिळावती धूप अर लू री बैवती लाय। ईसो लागतो जिया भास्कर देवता आपरे प्रकोप सूं समूची भस्मी-भूत कर देवणो चावे है... अर आ धरती वी तो कीसी कम पडे ? या वी तो भास्कर रे प्रकोप सूं आपने तपायमान कर रैयी है। पण रामू ने जिया ई सगळी बातां सूं कोई लेणो-देणो कों हो नी। वो पिरकती रे प्रकोपा री परवा करे बिना रिक्शो चलाय रियो हो ....तेज....श्रर....तेज।

मंजिळ

"ओ रिक्शेआळा....गागनगर चालसी ?"

'क्यूं नी सेठ साब....कैनी कित्ती सवारयां है ?"
रिक्शेआळे पूछयो ।

"थारे सामे तो ऊभा हा म्हे सगळा....समूचा चार तो मिनख हां.. दो छोटा....अर दो मोटा....।"

"वाह सेठ साब... थे तो कमाल ईज कर दीनो.... एक रिक्शे माथे दो सूं वत्ती सवारयां कीकर बैठ सके ?"

"अरे बैठणआळा तो म्हे हा रे ....जिण भांत बैठणो चासां बैठ जासां । थने तो रिक्शो चलावण सूं मतळब है के सवारयां गिणणसूं ?.... थने जठै चालण खातर म्हे कैवां बठै थूं रिक्शो लेयचाल.... मजूरी रा पिसा मिळ जासी ।" सेठ कैयो ।

रिक्शेआळो .. रामू रिक्शेआळे रो सुभाव ईसो को हो नी के रिक्शे माथे बैठणआळी सवारयां सूं राड करतो । ई खातर बिये सांयती राखी अर सोचण लाग्यो- "साचो कैवे ऐ ....बीने तो रिक्शो खेंचण सूं मतळब होवणो चाईजे .... सवारयां गिणण सूं बीरो कांई वास्तो.... ? एक बैठे.... दोय या के चार.... पण चार सवारयां सूं बेसी वो बी कैने रिक्शे माथे नी बैठावेला । क्यूंकि बो

रामू एकाएक रिक्शे रा ब्रिरक मार दिया। अर रिक्शो चं्चाड करतो थमग्यो।

"अरे गधा!....थाने वो आगलो कोठी रे सामे रोकण रो कैयो हो ना के ई कोठी रे सामे?....पत्तोनी थां लोगां रो ध्यान कठै रेवे है?....कैवो काई सुणीजे काई। हमे इत्ती दूर म्हाने पाळे चालणो पड़सी।"

सेठ भुंझलावां कैयो अर वै ईज उतरग्या....आपरी टुनटुन सरीसी सेठाणी अर पोलसण सरीसा दोय टाबरा सागे..आपरो माटे जिसी तोंद माथे हाथ फेरता।

काई पडूतर देवती रामू? वो बापड़ो तो ईसा बोल सुणण रो आदतियो होयग्यो हो।

सेठां आपरो बटुओ सभाळयो। सौ...पचास....बीस....अर दस रा लोट बारे काढया ..फेर पूठा घाल बटुओ खूजे मांय घर लीयो। सेठाणी सू पूछ्यो—"था ग्वने छुट्टा है काई?"

"अबार देखू..." कैवता सेठाणी आपरी काचळी माय हाथ घाल्यो अर झटकरतां एक रुपियो रो लोट सेठ री हायेळी घर दियो। सेठजी रुपियो रामू खानी सिरकावता कैयो—"लै रे....झाल फटाफट।"

रामू पैली तो रुपिये रे लोट ने देख्यो फेर सेठ जी रे मूंडे कानी। बीरी निजरा जिया कैवण लागी...."आईज सेठाई है काई थाणी?"

इत्ते माय सेठजी जिया फेर फाट्या—"अर भाले कनी रे लोट। म्हारे मूंडे खानी काई देखे है यूं। म्हारो कीमती समै बरबाद होयरियो है।"

रामू ने इत्तो क्रिरोध आयो के सेठ रे मूंडे माथे एक भाल जमाय दे। अर ईसू पूछे के ओईज थारो मिनखपणो है? थारे रुपिये रे लोट माथे ईज दुनिया रा सगला गरीब लोग जीवे है

बीरा ईसो कंवता हा के बेटबो दिरतदा–'तू म
माथे मी नी कांई म्हारे अर थईना री जिन्दा होवे है सबै
म्हारे इराम रा आगे ने जिरा काने मुराद देऊं ?...नेम
री रेपने. नी तो ईनू बी आगी परो....।" कंवतां बिया
हाथ सारे गंवणो सरू करिया ।

मरतो की नीं करतो ? बापड़ रामू सोच्यो 'ऐ तो नर
दया रो कांई बोगटे ? एक रो नोट बी गूंजे माय घाल ते
म्हैं कांई कर सकूं तो ?" बीमें रुपिये रो नोट लेयं'र मुट्ठी
कसटो भींच लियो । बीरां सगळो विरोध बापड़े लोट
नीसरग्यो । बीरो हिवड़ो आपरी मजबूरी माथे रोवण ने है
बिये आपरे भागविधाता ने कोसणो सरू करयो जिको पतो न
वखत बीरे भाग री लैणां मांडतो-मांडतो सूयग्यो हो ।

भरया कंठा सूं बिये सोच्यो के ईसी जूण जीवण ं
आच्छो है मर जावणो । पण जिया मरण री सोचतांईज
माथो चमनयो– "नी... नी....बो ईसो काम कदेईज नीं करे
कदेईजनी । मरणो तो मिनख री कायरता होवे । ऐईज तो परी
दिन होवे । जिका मिनख विपत्यां रे सामैं बी मुळकता रैवे
सई मायनां मांय जूण जी सके । अर जिका डरू होवे बैईज जू

रिणछेत्र सूं पूटा भाग अर मरणे री सोचे।"

बीने कठे भणियोडा आखर याद आया–"मरणो तो है सोरो अर जाणो है घणो दोरो।"

दुपारो ढळण ने आई हो अर बिये अबार तक काई खायो बी को हो नी। भोर ने घर सूं टुरता वखत मा बीने जोरा करती एक लूखी रोटी जिडायदी ही। अबार तक बिये कमायो काई हो? ....एक रुपियो!

रुपिये रे लोट ने अटी माथ चडावता बिये निस्वास छोडया पतोनी कित्ता रुपिया कमावणा है बीने अर इण खातर पतो नी बीने कित्तीक मेनत भळे करनी है। डोकरको री दवा-दारू खातर अर भाईये री पढाई खातर.... बीने मरता-मरता कमावणो है... अर कमावता कमावता मरणो है।

बीने याद पडे जद पंलीगोथ मा ने बीमारी रा दोरो पडयो हो अर बो डागदर मा ने वुलाय लायो हो। डागदर सा जद बीने बतायो के मा ने दिल री बीमारी लागी है ना बीरा हाम उडग्या हा। डागदर सा चालती वखत कैयो हो के मा ने गर जिंदो राखणी चावो तो पाच हजार रुपिया रो जुगाड कर नेशो ... नी तो मा ने टुरता टैम को लागे लो नी। एकर तो वा मसनायग्यो हो डागदर सा री बात सुणता।

मां री बीमारी रो ध्यान आवताईज बीरी थारदा सामे एक चलचित्तर जिसो घमण लागे–

चौदा— ... बो जणे बीरे माथे सूं बापू ... बो मरतो हो। बी ... री के एर ... बापू ... जाट

अर डागदर रा सबद— "वैरी सोरी" । पछे रोवणे-धोवणे-अर सोग-मातम रा दिन घणा दोरा कटया ।

ना तो बीरी इत्ती उमर ही के कोई बीने ढंग रो काम दे देवतो अर नाहोज बीने कोई काम रा ग्यान हो । लोगां आगे हाथ-पग जोड़तां वो थाकग्यो हो । आखरकार बीरे बापू रे एक भायले एक दिन बीने रिक्शाआळे सेठ सू जाय मिलायो । बी दिन सूं ओ रिक्शो बीरो बरोबर साथ निभाय रियो हो ।

बीरी अमूंजणी टूटी जणे कोई बीने हेलो दियो— "चालेला कांई भायड़ा ?"

"हें....। कांई कैवो सा....रिक्शो करणो है?....आवो बैठो । कठै चालोला ?"

"फिलम जावणो है....फटाफट पुगाय दे ।"

"अबार लो सा" कैंवता बिये वेगी-वेगी पैडल मारना फेर सरू करया । ताके बेगीसो पुगाय सके सवारी ने मंजिळ माथे अर.... मिल सके बीये खुद ने मंजिळ एक-न-एक दिन ।

□□□

उगतो सूरज ढळतो सूरज

कठेसूं करू ?. . समझ कोनी पडे । ढळते सूरज रो निस्तेज देखूं....के उगते सूरज री आभा ? एक वखत हुवे जणे मिनख आपरे परकास-पुंज सूं सारी सिरस्टी ने आलोकित करण मे समरथ होवे ।.. पण ढळती उमर खुद रे सरीर री सार सभाळ बी नी कर सके तो दूजो कोई वी री बाता माथे गौर कीकर करे ?

"भेळा होय जासो तो घणा कस्टा रो निवारण होय जासी". ..मा कैयो ।

पण सावित्री री समझ में आ बात को बैठेनी । बीरा साफ सबद हा.. .'म्हे कीरे बधण मे आणो को चाऊनी ।....म्हैं आजाद रेणो चाऊ ।. ..तूं थारे बेटे सागे रैय सके....म्हे नी ।"

सामे बैठ्यो म्हैं दोना री बाता सुणतो किमकरतवविमूढ सो कदी मा रे चेरे री रेखावा ने पढणो चावूं....तो कदेई सावित्री बैन रा तेवर देखूं ।

म्हैं बैन ने समझावणो चायो—'देख सावित्री....घणी आजादी बी नारी ने नुकसाण पुगाय सके । अर तूं जाणे....ऐकली

लुगाई ने देख'र मिनख किण भांत सूं नाजायज फायदो उठायो चावे।"

"म्है इत्ती गई गुजरयोड़ी कोनी के आपरो भलो बुरो नीं देख सकूं '....सैर माथं पार नी पड़ेली तो म्हैं होस्टल जासूं परी। थारी मां री सार संभाळ करता आज मनै पांच वरस हुयग्या। म्हैं कांई नी कैयो '....पण अबै म्हासूं नोकरा रे उपरात गिरस्ती रा भझट को सभेनी । तूं थारी मां ने ले जा ।....म्है देखणो चाहूं के तूं थारी मां ने कीकर राखै '....म्हैं तो म्हारी मां ने घणो मुंदेर देखलीयो पण आ फेर हां धापे कानी ।..माईत बेटे खनेही चोखा लागे ।" वा म्हा खानी मुखातिब होवतां कै रई ही ।

"माईत बेटे खनेहीज चोखा लागे । हुंह....।"थोरा सबद म्हारे हिवड़े माथे चोट करण लागा । एक'र तो जी मांय आयो के बीने पूछू के पैला बेटो जीवतो कानी हो के थाने माईतां ने खुद रे राखणो पड़यो? फेर बात वध जासी...आ सोच'र लोई रा घुंट गिटतां म्है उठतां थका कैयो—

"ठीक है वैन !....जियां थाने जचे वियांई करीजे ।...मां म्हारे सागे चाल सके ।....नारे रई थारी '....थारे हिवड़ें में आवे जियांई कर । ऐकली रै....सैर मांय रै....या के होस्टल मांय रै।"

□

कदेई ई करवट सूवणो चाऊं तो कदेई वो करवट ।....नीदड़ळी तो जियां सात समदर पार बैठी नी आवण री मजबूरी दरसावे । .... आंख्यां फाड़तो आकास ने निहारूं तो तारकड़ा टिमटिम करता हासता लागे ।....सोचूं—ऐ तारकड़ा हमेंस हासता दीसे ।....इयां माथे कदेई कोई कस्ट आवे कोनी या कस्टां मांय रै'रवी ऐ हासणो जाणे ।

' आपरी बराबरी जदै इयांसूं करूं तो खुद ने एक तारकड़ी
थी नान्हो पाऊं।... हिवड़ो बियांसूं पूछणो चावे– "साथोड़ा
रे जिसी जूण जीवणी म्हाने की सीखाव रे !"
इत्तें माय चांदा पूछे—"किण सोचां मांय डूबग्या थे ?"
"एं !"...म्है जियां आकास सूं धरती माथे आय पड़ूं
म्ने बतळायो कांई ?"
"थानेईज कैयो है।"...बिये फेर कैयो—"आज गुमसुम
यां दीसो ?...कांई खास बात है ?"
म्है झट करतो उठूं अर बीरो हाथ झाल'र पूछण लागूं—
म्हारी घरमेल... एक बात मानसी ?"
"बा पूछे—"बताओ तो सरी....कांई बात है ?"
म्हैं कैवूं—"मा ने आपां रे सागै राखला ?.... बा बी
ावणो चावे।"
"क्यूं पण ?.... हम्मे बेटी रावे कोनी ?....जणे तो कैवती
। - म्हैं माईतां ने खवाय सकूं ।....बेटे–बीदणी रे आसरे माईतां
रैण दूं कोनी।"
"म्हारी भाग बाटणी !....वे बाता नै रैण दे। हम्मेरो बात
कर। .... हम्मे मा री सरीर होयग्यो बूढो।........ आराम
ावे। काम बीसूं होवे कोनी।....मोटामोटो समझलै के सावित्री
ुद हम्मे की बधण माय बधणी को चावेनी।.. बा कैवे ने आ
रे घरे लेय जावो।"
चांदा कैयो– "म्है मां री सेवा चाकरी करण सूं हिवड़ो को
ुराऊ नी। पण पैलीपूठ बात तो आ है के मा आपांरे घरे रैयसकै
ोनी।.... थाने-म्हाने तो जूण काटता पाच बरस होयग्या अठै।
ई जंगळ माय रैवतां आपां में दुख-सुख सैवण रा आदत्तिया
ोयग्या।.... आपां अठै उनाळै मांय तपती पूण रा थपेड़ा बी

खाबा .... अर सियाळै मांय ठंड रो भभको वी माथे म
बिना बीजळी अठै रात्यां माय हाथ ने हाथ को दीसेनी।—
जाणो के ऐ परेसानियां मां कोय झेल सकेनी।"

"आ बात तो है म्हारे हूंकारे माथे बिये कैणो सरु राख्ये-
"रैई वात सैर मांय रैण री।....तो थैं खुद समझदार हो।
करतो ओ टापरो तो आपासूं छूटे कोयनी।....अर सैर माय
माथे एक कमरियो जोवतां जूता घिस जावे। फेर भाड़तिया
कोई जूण होवे कांई?....कदेई अठै तो कदेई वठै....गाडिया
जिसी जूण!"

म्है चांदा ने समझाणो चायो- "चांदड़ली!.... सगळा
एक सरीसा को रैवेनी।.... थारो कैवणो ठीक लागे के मर
बणायोड़ी आ जमीन गयां पछै हाथ को आवेनी....पण ए
म्हारी बी तो सुणो।".

थे कैवतां जाबो.... हूं जाणू हू।" बीरा बोल हा।

म्है सरू राखतां आगे कैयो—"आपां थोडी ताळ मां
सावित्री रे भेळा होय जावां। .... भाडो किसो आपाने मरत
थोडो देवणो है? बखत आवतां ई जमीन ने आपां बेच'र मं
छोटो-मोटो घर ले लेसां।"

"थें आसार चावो कांई हो?" म्हारो बात पूरी होवतं
पैली चांदा ताव खावण लागी —"दो टैम गुरा चैन सूं
टुकरड़ बी पूटा कडावोला के?"

"अरे! इयां कियां बावड़ो?" म्हैं अचरज सूं पूछयो
वा बोली— "बचयोड़ी जूण थारो थावो तो जियां
बितांहीज रैण देवो।.... ना आपां मां मने जाय सका अर
हीज आपा मने आय सके.... इसो मणो।.... सावित्री जा
मां जावे। वै दोनूं एक मरोमीतीज है... हमे गुप जावो।

ी नींदड़ली सतावे ।" आ केवतां धरमेन्न तो आपरो धरम निभाय
ग्यो । पण म्हारी आख्यां मूं तो जिया नींदड़ली कोम्यां परे ही।
: हमे कीरी बात मानूं ?....मा री.... सावित्री री .... या के
रमेल चादा री । वृद्धि री ढाळ माथे सोन री तळवारा रा
ार टण टण करता पडता रह्या....अर मनै लाग्यो जिया उगने
ूरज अर ढळने सूरज रे बीचोबीच एक गैरो खाई है . अधारे री
ाई.... जिके माय पड़यो म्हैं छटपटाऊं ....चीखूं . . चिल्लाऊं ....
ण जिया म्हारी न कोई सुणे .... न कोई देखे .. ।

सां'ग

घड़ी-घड़ी ठौर-ठौर सां'ग रम्या जावे इण सिणसार मांय।
कैईयां रो पाट्टो रम्मतां रो अर कैईया रो पाट्टो जीवण रो !

पण ई सां'ग री कथामूळ ने निरखूं तो घणो इचरज होवे
मिनख री विडम्वनावा माथे....जिकी वीरो भाग वणगी होवे।
नरकां री ई रेख सूं लारो छुडावण खातर मिनख काई-काई
करे ?....पण जद वो आपरी हार मानले तद तांई वीरो जीवण
तरीको समूचो ई वदळाव खाय लेवे। अर ई वखत सूं ई सरु होवे
वीरो सां'ग।

आपरे सां'ग री छाप छोडतो वो समूची आस्थावां
विस्वासां रो घांटो मोसतो भेळो करण लागे हर की रो तरस !..
हर की री सानुभूति ! ई तरां वी खने आपरो पेट पालण री
आहीज छद्म जुगत रै जावे। कांई वी मिनख रो वी ईसोही
जतन हो या पछे वीरो माण वीरी विवस्ता माथे भारी
हो ?....समझ सक्यो कोनी म्है !

चंदर कयो हो—"वावूजी ! बारे एक मिनख आयो है।"

"पछे ?" काम निपटावता हीज म्हैं पूछयो हो।

"वीरे सागे वीरो पूरो परवार है....लुगाई है, एक छोरो है–कूबडो सो...एक नान्हो दूध पीवती टीगरी है... अर दूजी छोरी थोड़ो जोवन लियोड़ी।" एक हीज सास माय चदर कैयग्यो।

म्है मूंडो उठा र पूछ्यो–"पण म्हा सने नू किण गातर आयो है रे चदर ?"

"वो ई खातर बावूजी के वीने काई इमदाद री जरूत है।....थोड़ो–घणो वीने मिळ जावे तो वो कैवे है के ग्राज बिये रोटी–वीजी रो जुगाड़ आपणो टिफण तीस रुपिया माय वेच'र करयो है...."

"भाई कुण है ? कठेसू आयो है ?....क्यू कर आयो है ?... थोड़ो खुलासो करे तो वात पल्ले पड़े।" म्हैं चदर ने इतमनान सू वैठ'र केवण रो कैयो।

चदर जिको वतायो वो साची हिवडे माय संवेदना उपजावण सरीसो हो।

थोड़ी ताळ माय चदर वीने म्हारे सामे लेय आयो। म्हैं एकर वी माथे दिरस्टी नाखी। वो ना तो फाटोडा गूर वैरयो हो, अर ना ही खासो दीसतो हो...विचाळे निमम रो मिनख हो वो। सादारण वेस !

वोल्यो—म्हैं नागपुर सू चाल्यो हो... म्हारे टावर री कमर माथे एक गांठ नीसरी है। डागदरां ग्रापरेसण वतायो है। पण म्हारो जी नी मान्यो। कोई कैयो—"राजस्थान रे बावा रामदेव मिदर धोक देय ग्रावे तो सो ठीक होय जासी।"

"बावे री इत्ती मानता है सौराप्टर माय !" म्हैं इचरज सू पूछयो।

"उठै तो बावे रो थाण बो है। पुजारी माराज बड़े मनमस्त

अर रानीजोगा करता रैवे .... वियां ईज कैयो हो।"

"थें बावा रे जावो हो ?"

"नई सा.... म्हैं तो वठै जाई आयो हूं। बात इयां हुई सा के म्हैं पूठा जोधपुर मेळ सूं आवता हा....मारग मांय म्हारो बगसो चोरी होयग्यो।"

"पछै ?"

"पछै काई सा....बारह सौ रूपिया हा बक्से मांय.... कपड़ा-लत्ता न्यारा।"

"ग्रो हो....आ तो कोजो होई"

"म्है अठै कलेक्टर सा'ब सूं वी मिळयो अर रेलवे रा डी आर एम सा'ब सूं वी.... पण सा वियां कह्यो— "म्हैं कांई वी नी कर सका।"

"थे पुळस माय रपट-धपट लिराई कै नी ?"

"म्है थाणे गयो हो— पण थानेदार सा'ब कह्यो कै थें लिग'र देय देवो.... जदेई म्हाने पतो चालसी थानें खबर कर देस्या ... आ'र आपरे समाण री पैचाण कर लीजो।" म्हैं सौराष्ट्र रो रैवणवाळो .... घड़ी-घड़ी अठै आऊलो तो कित्तो भाड़ो सा' लागेलो ? जित्ता गया परा थोड़ा बत्ती तो इण माय फुंक जासी... परेसाणी न्यारी... होवणी जिकी हुई....म्है लिग'र दियो कोनी।

चन्दर फेर कैयो— "कांई करो नी बावूजी इण मा'र... गरीब मिनख है.... इणरे टाबरां ने देख'र तो म्हाने घणी तरस आवे है।"

"बात तो थारी ठीक है चन्दर !.... ईसी विपदा तो किण रे माथे नीं आय सके.... मिनख मिनख ही मिनख रे काम आवे। पण.... दियो कांई जावे है" सोच'र म्हैं कैयो— "[illegible]

सूं घणो टैम भेळो करोला तो रिनाक होगी? . पचास-साठ सूं बत्ती तो को होवैनी ? .... इणे सूं इया रो काई बणसी ? .... इणां तो रोजीना रो खरचो ई नाईज ट्याने. . पछे पूठा जावण रो जुगाड किया बैठेनी ?"

"गो नो है।" चन्दर हामी भरी।

म्है एकर फेर वीने निरख्यो म्हाने लाग्यो जिया काई इमदाद पावण रे विसवास सूं म्हाने वो टेर रियो है।

वाणीने आर देरवो बगीचे मांय वीरी लुगाई नान्हे टावर ने आपरे षण सूं चिपकाया बैठी ही .. बडोडो छोरी एक खाने बैठी ही अर छोरो उछळतो कूदतो-रमतो हो .. मजबूरिया सूं बेखबर। वीरी पीठ रो उभार कूड़ले सूं ऊपर उठतो विवसता रो भाण करातो हो।

म्हारे मस्तक माय एक जुगती ऊपजी। म्हारे मूंडे सूं निकळयो- "जठे चा' वठे रा, । देख चन्दर ! ... इया करा ... अर थे वी सुणो ! ..." म्है वी मिनख ने देख'र कैयो-"म्हैं लोग तो अठै सगळा नोकरी-पेसावाळा हां.. अर थे जाणो आज होयगी वीस तारीख.. कीरे गूंजे मांय पाच रो लोट लाधे के नी लाधे.... पण दो-एक तगडी साख आळा है अठै- ....म्हाने वी वखत वेखत जरूत पडे तो इयारी सरण धावां.... वियाज तो लेवे है पण काम तो सार हीज देवे।"

"किणरी वात करो हो बाबूजी ?" चदर अणजाण बणतां पूछ्यो।

"अरे वैईज-पांडे अर लाल !....तूं कदैई इयारे चक्कर मांय फस्यो कोनी काई ?" म्हैं चंदर सूं प्रश्न करयो।

"मुसीबत रे वगत तो हर किणने फंसणो पड़े सा।" चंदर म्हारे कथन री पुष्टि करी !

"पछै पूगण सारू कितराक रुपिया चाईजे थाने ?"

"सौ अर दस रै हिसाब सूं चार टिकटां रा चार सौ अर चाळीस होवे सा।"

"वठै कांई धंधो करो थें ?"

"म्हैं वठै कोपरेटिव सोसायटी मांय सेल्समैन हूं।"

"जदै ठीक है.. म्हैं थाने पांडे सूं पांच सौ रुपिया दिराय देवां....जामणी रे तौर माथे म्हैं लोग बिचाळै पड़ जासां।...थें घरे पूग'र पंदरै दिनां रे मांय मांय ऐ रुपिया पूठा कर देवो।...जठै ताई बियाज री बात है म्हैं कोसिस करांला के पांडे थांसू बियाज नी लेवे....अर लेवे तो कमसूं कम लेवे।"

'चोखी बात है सा। पूगतां तीज दो दिनां रे मांय म्हे रकम पूठी भिजवाय देसूं। चार एक दिन मारग मांय लागेला...हफ्ते-दस दिनां तक थानैं मिल जासी।"

'पण एक बात सुणले भाईडा !....गर रकम पूठी नी आई तो समझ ले के ऐ रुपिया म्हानै बिपग्या। तिनखा रे बखत पांडे म्हांसूं ऐ रुपिया धरा लेवेला।'

"म्हारे लिलाड़ माथे तो कांई लिखियोडो कोनी सा....म्हैं कांई कैवूं ? घणो कैवणो ईज बेकार है....थें म्हापर बिस्वास राखो।"

म्हैं चदर ने एक खानी ले जार केयो—'म्हारे अर थारे दुलाया सात-आठ साथ्यां सूं बी बात करतो। मिनख तो भलो दीसे। खैर ईरी जावण दे... आपां तो ईरे टाबरां खानी देखां हां....ऐकलो आवतो तो स्यात आपां की नी कर सकता।....कैवे है रकम पूठी कर देसी अर नी बी करी तो आपां समझ लेसां के बाबे रे

नांव हरेक जणे पचास रुपिया दान ही दिया ।"

"किसोक बढिया उपाव सोच्यो है बाबूजी थां ! म्हारो तो हिवडो कैवे है के ओ पईसा अवस पूठा कर देसी ।" चंदर बिसवास जतायो ।

सगळे साथ्या सूं वात करी । कांई तो सालोसाल बाबे री धोक सारू पैदळ जात्रा करता हा । ले-देर बाबे रे नाव देवण ने सगळा त्यार होयग्या। एकराय हुवी के पांडे ने बुलाय'र रकम दिरा दी जावे ।

पांडे ने बुलवायो । एकर....दूजर....तीसर । घणा नाज-नखरां सूं वो आयो । समूची बात सुण'र वो बोल्यो-"बाबूजी !... ई भरोसा किताई घूमे है....किण-किणरी मदद करोला ?... म्हैं भाल'र लाय दूं ईसा छप्पन मिनखा ने ।"

म्हैं कैयो—"देख ओ सो थाने नी विचारणो है । आखर मिनख ही मिनख रे काम आवे । वापड़ो मुसीबत मांय है....ई बखत काम आवणो आपणो धरम बी तो है ।"

"चोखो !....म्हैं रकम देय सकूं ।...थैं सारा री जामणी होसो ।....म्हारी रकम पूठी नी आई तो म्हैं तो लिनखा माथे थामूं निवाळ हूं । पण एकर म्हाने बी मू मिळण तो देवो ।"

पाडे छूटत्या ई पूछयो...."इण दिना बाबे रो मेळो बी यो भरीजे नी....पछे तूं यठै अवार हीज क्यूं ग्यो ?"

"म्हाने नी मालम के मेळो कद भरीजे !.. म्हाने तो टाबर वातर किण बतायो हो को गयो परो ."

"गाडी मांय सूं जद बबगो उठीज्यो बी घड़ी तूं कांई करतो हो ?" थाणेदारी जतावता पाडे फेर पूछयो ।

"सूतो हो अर काई करतो हो ?....जागतो होतो तो कांई बबसो उठीजतो ?"

नी तो जबाब देवो। म्है कठै आगीना

'र पाडे तेस खायग्यो अर बिये साफ सबदा
"ई तरां मू म्है थाने रुपिया-पईसा नी

ो बाता सुणता रैया। चदर कैयो–
ा घणो स्वाभिमानी दीसे। की शरत
रे दायरे माय बधीज'र नीचो देखणो

ग्यो –"क्यू राड खडी करे है भायला!
ाने देवा हा नी।"

ाबूजी।" पाडे बोल्यो–"ओ मिनख
, ह .. म्है ईनें आपणो माळियो देवण
. नण ने त्यार हू....पण ओ मानैईज
ायण ई चाईजे....क्यू भाई ?....थोड़ो
ात मांय वजन लाग्यो।

लेजा'र कैयो– 'बाबूजी ! इयाने
माय ना फसो तो होज भलो।....सागै
दा न खास्ता काई गडबड़ होयगी तो
ा रुपिया दिला-दुलार चालतो करो
वी मनै सावळ" लागी।

ाो– "तू रुपिया म्हा लोगा ने
थारी रकम पूठी आवे या के नी
लिवाळ है.... हमे बोल देवणो है

"ओ तो सरासर थारी खुदरी गळती सूं होयो है।" पांडे वीने डाट-डपट करी- "पण तूं बीकानेर किया आयो? तूं तो है के जोधपुर आळी गाडी मांय सफर करतो हो?"

"म्हारे नाते रा बी.बी.एल सरमा अठै लोको शैड मांय काम करता हा। बियांसू मदद लेवण रे बिचार सूं आयो....पण अठै ठा पड़्यो के....वियां रो कठै बदळी होयगी।"

"पण तूं ई दफतर मांय हीज क्यूंकर आयो?"

"देखो भाई जी....मजबूरी मांय मिनख ठोर-ठोर रुळै। म्हैं घणी जागा गयो पण....मदद को मिलीनी।"

"किया बिसबास करलूं के तूं रकम पूठी कर देसी?" घुम फिरा'र पांडे मूळ बात पकड़ी।

"म्है पैलां बी कैयो के—म्हारे लिलाड माथे की नी लिखियोड़ो है...के म्हैं कीसो मिनख हूँ....थामे विस्वास ऊपजे तो रुपिया देवो।"

अब की पाडे जुगत चलाई—"म्हारो माळियो खाली पड़्यो है। थें बीमें रैय सको....थारे खातर रोटी बीजी रो परबंध म्हैं तद तक कर देसूं जद तक थांरे घरा सूं रूपिया नी आवे।...तूं आपणे घरे टेलीफून के तार भेज सके।"

"म्है बी नोकरीमेन हूँ....म्हैं अठै घणा दिन रैय सकूं कोनी। मन्ने बठै आपरी डिपटी जोइन करणी है।"

"पछे म्है थाने आज ही सिंझिया आळी गाडी मांय बैठाय देवूं।....मेळ मांय म्हारो भतीजो चाले है। वो थांने अजमेर तांई पुगा देसी। आगे रो इन्तजाम बठेसूं कर लीजो।"

"जदै अठैसूं ईज इंतजाम को होय सकेनी तो बठेसूं किया होय जासी? देखो भाईजी....थें गर रुपियां सूं म्हारी मदद कर

रो सो अवस करो... नी तो जबाब देवो। म्है कठै आगीना ाऊं।"

बीरो पडूत्तर सुण'र पाडे तैस खायग्यो अर विये साफ सबदा ाय एलान कर दीनो— "ई तरां सूं म्है थाने रुपिया-पईसा नी प सकूं।"

म्है नेड़ै ऊभ्या विचारो बाता सुणता रैया। चदर कैयो– बाबूजी मनै तो ओ मिनख घणो स्वाभिमानी दीसे। की शरत यं श्रो मिनख अविस्बास रे दायरे मांय बधीज'र नीचो देखणो ो चावेनी।"

म्है पाडे ने बुलाय'र कैयो —"क्यू राड खड़ी करे है भायला' रे पईसा री गारटी म्है थाने देवा हा नी।"

"थे को समझो नी बाबूजी।" पाडे बोल्यो—"ओ मिनख र्जी है....म्हैं दावे सूं कय सकू ...म्है ईने आपरो माळियो देवण त्यार हू....ईने रेल सूं भेजण ने त्यार हू... पण ओ मानै ईज ानो... ईने तो बस नगद नारायण ई चाईजे... क्यू भाई ?.. थोड़ो चो थे बी।" मने पांडे री बात मांय वजन लाग्यो।

चदर म्हाने एक खानी लेजा'र कैयो– 'बाबूजी ! इयानें डे रे घरा रास्ता रे चक्कर मांय ना फसो तो ईज भलो।... मार्ग वान छोरी है ... काल ने खुदा न खास्ता कांई गडबड होवगी तो ई से रगड़ीजाला।... ईने तो रुपिया दिला-दुवार चालतो करो ई भलो।.... चदर री बात बी मनै साचड़" लागी।

म्है पाडे ने फेर समझायो— 'तू रुपिया म्हा लोगा ने परियो है ना के ई भाई नें। थारी रकम पूरी आवे का रे नी ावे.... तिनरा माथे तू म्हासूं लिखाले है.... हमे सोच देखणो है नी ?"

"थें कैवो हो तो म्हैं देवण से त्यार हूं .... पण म्हारो हिसाब गवाई को देवेनी ।"

म्हैं एक'र फेर बगीचे आयो । वो आपरे टाबरां सागे बात बैठ्यो हो । बीसू पूछ्यो—"देख भाईड़ा म्हैं थारी इस्यति समझां हां.... म्है थारी मदद बी करणी चावां.... म्है पांडे सूं रकम लेर अठे सूं नागपुर तक री टिकटा बणावार थानैं गाडी माथे बैठाय देवां .... अर लारे बचियोड़ा रूपिया वो थारे हाथ मांय भलाय देवां....।"

वो जियां बिफरतो बोल्यो—"नी सा ।.... म्है म्हारे सुमीते सूं जास्यां .... दिनूगे जावा के रात ने जावा.... थाने बीसूं कांई करणो ?"

"थें जोसी गाडी सूं जावणो चावो म्हैं वो गाडी मांय ई बैठाय देवांला ।"

'नी सा ....थें तो नगदी दिलाय सको तो दिलाय देवो.... नीं तो रैण देवो ।"

बीरे पडूतर सूं मने थी खुंदक लागी—"थें तो अजूबा मिनख दीसो । थांने घरां पूगणे सूं मतळब है के नगदी लेवण सूं— रूपिया थारे हाथ मांय देवा....के बियासू टिकट दिलाय देवां....एक हीज तो बात है....अर फेर म्हैं ऐकलो तो इत्ती बडी रकम भेलए सू रियो ? म्है आठ–दस जणा भेळा होय'र जामणी दीनी है... आखर बियां सगळां ने वी तो तसळी होवणी चाईजे ?"

"ठेठ नागपुर तक री टिकटा अठैसूं बणे ईज कोनो सा...थें चावो तो टेलीफून कर पूछाय सका....म्हारो काम तो नगदी सूं होज नीसरेलो ...थें देणो चावो तो देवो....नी तो नट जावो ।"

अचानचक म्हारे माथे मांय गाई टणणयो—"ओ मिनख नगदी माथै ई क्यूं अड़ियोड़ो है ?"

म्है पूठो आयो। चपड़ासी ने कैयो—"बीने जा'र कैय दे के अठै सूं चालतो वणे। म्है बीरी काई मदद नी कर सकां।"

सरमा अर दा कैयो—"साथीडा !....देवणो है तो देय-देवार नरी करोनो।....जिको होसी देरयो जासी।"

"नीं....बीने की नगदी देवनी कोनी।" म्हारे सबदा माय एक निसचय रो भाव भळकतो हो— 'छोडो बीने ...आप-आपरे काम लागो।"

घरां हालते बखत मारग माय बीने फेर देरयो। गेजडी हेठै टावर-टीगरां सागे बो बैठयो हो. मुदबुद गमायोडो। ठा नीं आपरो उळभरण ने मुळभावण माय कठै उळभयोडो हो। पण सायकल रे हरेक पैडल माथे र र'र माय कठै पीभीजतो हो के जरतमद मिनख री आज मदद नी कर सक्यो।

रात ने घरमैल ने जद किस्सो सुणायो तो बीयें कैयो—"दूजा री जावण देवो....थे तो की ना की बीने देईज देवना .. आज गे रोटो तो बियेने नसीब होय जावतो।"

□

आगले दिन दफ्तर पूगतांईज चदर सामै पटनयो .. बिना म्हारी हीज वाट जोवतो होवे "बो मिनख डे'री बी पूछतो हो बावूजी....अर पांच सो रुपिया चार दिना पैली दटेमू लेय'र आया हो।"

"काई कैवे है तू ....?" म्है चदर सू अचरज माय पूछयो—

"दाने किया मालम होयो ?"

"डे'री माय म्हारो सगो काम करे है। जिका ने जद म्है बात करी....बिचाईज बतायो के बो मिनख दटे आयो हो....अर म्है लोगा बीने पाच सो

उत्तं मांय सगळा सायिड़ा भेळा होयग्या । भा कैयो—"कितो भोळो बणतां हो दुस्ट कठैरो ?"

सरमा बोल्या 'आपा वीनै नी....वीं री लुगाई-टाबरां सारो देखता हा ।"

पांडे वीं आय पूग्यो । बोल्यो—"म्हैं नीं कैवतो हो के श्रो मिनख फर्जी है....आखर म्है वी दुनिया देखी है ।"

"पण कांई वीरे ई सांग मांय वीरी लुगाई अर टाबर वी सरीक हा ?" म्हारे मूंडे सूं हड़ाट निकळयो ।

□□□

बडो मिनख

जान धूम-धाम सूं होळे-होळे चाल रेई ही। बैण्ड-बाजा अर सहनाई सूं निकळी एक सूं-एक बदर फिल्मी गाणा री धुन्या सूं वातावरण माय मस्ती अर जोश रो इजाफो होय रैयो हो। जवाना रो टोळो आपरे होश रग माय मस्त होय'र नाचतो चाल रियो हो। बीचों बीच बीन राजा घोडी माथे विराजमान होय मन माय उमग री तग्ग लियोडा आपरे सुपना री राणी ने ब्यावण ने चालरिया हा। इया रे लारे ही मोटरां. कारा .. अर तागां री रैळ-पेळ जीमाय टाबर-टींगर अर लुगाया बैठी ही।

नाच गान री मण्डली माय अजय नाम रो एक नौजवान आपरे टांग सू देखणिया री निजरा आप माथे बरबस आकर्षित करतो हो। वीरे मूंडे सूं भ्रो सूजतो हो के सगळा सूं घणी खुसी वीनेहीज होय रैयी है। खुसी होवे बी क्यो नी ? वीरे जिगरी यार राकेश रो ब्याव जो हो रियो हो। जिके री अडीक वो खासे समै सूं कर रियो हो।

सैर रे खासमखास मारगा ने गुंजावती अर परकासती राकेस री जान आखरकार ठिकाणे सामे आय ठैरी.... जिके रे की कमरिये माय लजावती.... सरमावती.... घूघटियो काढे .... राकेस

री गुपन-गुन्दरी आपरी नेड़ी-तेड़ी भायलियां सूं घिरयोडी वैठी ही।

इत्ते मांय अजय रे हेले सूं रावेस चौकीज्यो–

"कैवो वीन राजा !

आज तो घग्गा वजवाया वाजा !"

"कैवो तो भोजाई ने जा'र कैय आऊं के आपरे मन मिंदर रा वांडा खोल देवो....ताके थांरा पति–परमेसर वीये मांय पदार-पण कर सके।"

पड़ूतर माय वीन राजा होळे-होळे मुळकता रैया।

कन्या पक्ष री तरफ सूं जान्या री आच्छी-खासी खातर होय रैयी ही। बियां रे खावण-पीवण मांय कीं किसम री कमी नी राखी गयी। जान्या री हरेक इच्छा पूरी करी जावे... ओ आदेस कन्या रे माईतां देय राख्यो हो।

हंसी-खुसी रे ई माहोळ माय अचनचेत कड़कड़ांवता बोळ सुणिज्या--

"हू कैवूं हूं के पैलां तो दस हजार री बात तै हुई ही ....पण हमे आठ हजार हीज क्यूं ?"

"ठाकुर सा !....म्है आपरे सामे हाथ जोड़'र बिनती करूं हूं....थें म्हारी लाज राखलेवो !... म्हा गरीब सूं इत्तो हीज होय सक्यो है।"

"म्हैं कीं नीं जाणूं....मने तो पूरापट दस हजार रुपिया नगदी चाइजे....अवार....ई घड़ी।... थारी इत्ती औकात नी ही तो तूं पैली साफमसाफ कैवतो !....ताके थारे जिसा भिखारयां रे वाडे आ'र म्हा जिसे ईजतदार मिनख रो नाक तो नी कटतो।"

सगळे जान्यां मांय जिया नाठा–दौड वापरगी। कोई तो हाथ धोया विना हीज नाठ्यो....अर कोई हाथ मांय चिमचो–

नननरी मान्या हीज । बीगी घी ममम मांय नी जाय रियो हो के मागर माजरी क्दा है ?..

बारे मां'र बीन अर बीनणी रे वासां मांय होवती राड ने देख्यो अर गुण्यो कद लोगां ने ममभने वगत को लाग्यो नी के मुआमलो दायजे माथे मां'र मटक्यो है ।.. पण बियां ने समभावनो कुण ? मुआमलो नो मगां-मगां रे बीच रो हो ।

बीनणी रो बाप बरोबर हेठ भाव मूं गिडगिडांवतो जावतो हो...हाथ-पग जोड़तो जावतो हो...नाक रगड रियो हो....अर अठे तक के बिंये आपरे माथे री पागडी तक उतार'र बीन रे बाप रे पगां माथे धर दी । बीगी आख्यां मूं आंसुवां रा टपका चूवण लाग्या हा । बिये कैयो—"ठाकुर सा ! साच्ची मानो तो म्हा खने ई घडी मळे काई थाने देवण सातर हैईज कोनी.. .म्हे आपरी लाडेसरी री खुसी खातर आपरे ई घर ने बी अडाणे धर दियो है ...अर आठ हजार रो जुगाड होन होय सक्यो है... जिको आपरी सेवा मांय हाजर करूं हूं ।...हमें म्हा खने माथे री ई पागडी रे सिवाय की कोयनी....म्हारी इज्जत बचाय लेवो ठाकुर सा !....म्हारी इज्जत बचाय लेवो !!"

"इज्जत ? . कींगी इज्जत कीरी इज्जत ?....था जिसा री बी कोई इज्जत होया करे है ? जिका आपरी जुबान सूं नट जावे । ई भरिये समाज मांय कय देवो के थें नातो तै करता सूं पैली दायजे मांय पूरापट दस हजार नगदी देवण रो केयोहीज कोनी हो । पण याद राखो के हूं एक पईसो बी कमती लेवणियो को हूं नी ।. .था तो अबार घण्टे भर मांय दो हजार रुपिया रो जुगाड कर देवो नीं तो म्हारे बेटे री जान बिना ब्यांव करियेहीज पूठी जासी परी ।"

ठाकुर सा आपरी चेतावणी दे दीनी अर बीनणी रे बाप

रघुनाथ री पागड़ी पग सूं उछाळ'र परने नाख दीनी।

राकेस रे बाप रा ऐ सबद सुण'र अजय रे हिवड़े मांय तड़ए सी मचगी। वीने ईसी आसा को ही नीं के ठाकुर सा धन रे लालच मांय इत्ता हेठा होय सके। पईसे रे लारे कांई बियारे छोरे री जिणगी रो कोई मोल कोनी? दायजे रे मांय माये कागदारे लोटा रे लारे न्तो नी कितीक मासूस जिणगियां री घांटी मोस दियो जावे....पतो नी कितीक जान्यां ब्यांव होवण सूं पैलीहीज पूठी जावे परी....अर कितीक छोरयां रा सुनेरा सुफना सगळी जिनगी कवाराहीज रैय जावे। इणरो दास कीने दीयो जावे-छोरां ने?....वीरा मायत ने??....के समाज ने??? ई वात रो फैसलो करण सूं पैलीहीज अजय ऐ माथे मायं एक विचार बीजळी जियां कोंध्यो अर वीरा पग फटोफट आपरे घर खानी मुड़ग्या।

□

जद नेड़ै-तेड़े अर भाई- भतीजां रे बीच-बचाव सूं बी बात को बैठी नी तो ठाकुर सा हुकुम दियो—"चालो बेटा!....जान पूठी जासी। थारो रिस्तो कठ चोखे घराने मांय करसा। पत्तोनी कठेसूं दलिदर मिनखां सूं पालो पड़ग्यो।" ठाकुर सा कैयो अर आपरे छोरे रो जवाब सुणण सूं पैलाईज बीरो हाथ झाल'र चंवरी सूं उठाय लियो।

"अरे.... अरे! इयां कांई करो ठाकुर सा।.... चंवरी माथे बैठ्योड़ै बीन ने फेरा सूं पैलो को उठावे नीं। बेगी करो इयाने पाछो बैठाओ।.... लगन री घड़ी निकळती जाय रैयी है।" पिंडत जी इचरज सूं देखतां कैयो।

"भाड़ मांय पड़े आ चंवरी अर फेरा ....म्हैं कैयो नी के म्हारे बेटे रो ब्यांव अठै को होवे लोनी।" अर जान पूठी ले चालण खात[illegible] मा आदेस दे दीनी।

"ठाकुर सा....देखली थांरी इनसानियत....अर भळमानसी। थें लेय जावो आपरी जान पूठी।....हमे म्हाने कोई गम कोनी होवेलो।....पण इत्तो सुणता जावो के म्हारो बेटी रो ब्यांव अबार होवेलो....ई टैम.... ई घड़ी.... ई लगन मांयईज।....पण थांरे बेटे सागे नीं.... अजय रे सागे.... थांरे बेटे रे भायले अजय रे सागे!.... एक बड़े मिनख सागे!....पिण्डत जी चंवरी तैयार करो।"

कैवतां रघुनाथ अजय रो हाथ झाळे मांयने टुरयां। हमे विया री पळकयां मांय आंसुवां री धार वैवण लागी ही.... पण दुख री नीं.... खुसी री....घणी-घणी खुसी री।"

L

लाय

ज्यूं-ज्यूं बीरो घर नेडो आवतो, बीरा पग पैली सूं घणा लड़खड़ांव जावता। आपरे घर रे बाडे ग्या'र बो बी सेठाई मूं कूक्यो जो माथे बीने तो कांई बीरे पुरखां ने बी नाज हो।

"गो....म....ती....बां....डो....खो....ल खो....ल ...खो....ल। मुणी जे को य....नी....का....ई। सू.. .मरगी... कांई ?"....

बीरी जुबान लड़खडावण लागी। बो जोर सूं कूंटो खटका-वण लाग्यो जियां भतूळियो आयग्यो होवे।

गोमती हड़बड़ा'र उठगी। बीरो नींदयां मूं भारी पळक्या पूरी तरां सूं खुली बी कोनी ही कै एक भळै गाळी गोटी रा भात बीरे हिवड़े ने चीरती घाई–

"बदजात....काई....होयो थाने ?... बा....रो...."

बीये नाठ'र बाडे रो कूंटो खोल दियो। पून रे सटचारे साथे दारू री तीखी वास बीरी नास्यां माय उतरगी। बा कांई कैवती बीसूं पैली एक करारो हाथ बीरे डावड़े गाळ माथे आय पड्यो अर ईरे साथे ही लड़खड़ावती जुबान सूं अणगिणत गाळ्यां री बिरखा–

"गईवाळ....लुची....बेह्या रांड।....कदमूं बारो पोड़....

"तूं खाय लियो ?"

"ऐंहें...।"

'क्यूं'"?"

"म्हैं खाय लेवतो तो थें काई खावतां ?" गोमती सौ वातां री एक वात कैयी ।

"ठीक है.... हमे सू जा ।" कैवतां वो उठयो अर मचलो माथे चित पड़ग्यो । थोड़ी ताळ मांय वीरां ग्वर्राटा रात री सांयती ने भागता रैया ।

□

गोमती री पळकरा सूं नींदड़ली जिया उडगी ही । जद कदैई वा भविस खानी सोचती तो वीने आपरे टावरां रो भविस अधारे टिकतो दीसतो । वा इण इस्थति सूं लारो छुड़ावण री घणी कोसिस करती पण सौ निरर्थक होवतो लागतो । गोमती रे धणी री दारू पीवणो हमे हमेस रो काम होयग्यो हो । वा वियाने घणी वार समझावती पण पूठो पड़तर वीने मिलतो डाटो अर भाटा धरां री सिकळ माय । कोई दिन ईसो को उगलो नी जद वीने मार रो परसाद वीरे पति परमेसर सूं को मिलतो नी ।

दारू रे लारे सेठ गिरधारी लाल हमे "गिरधारियो दारूवाज" वजण लाग्यो । नसे-नसे माय वो आपरो सगळा जमी-जायदाद अर जमा-पूंजी रे सागे-सागे आपरो विवेक वी गमाय चुक्या हो । कांई करतो वो ?.... विये तो खुद "सुरा" री सुन्दरता ने वड़ा माय रमाय लियो हो ।

इये सोमरस रा गुटका वीरे मन अर वुद्धि ने समूचे रूप सूं निचोड़ चुक्या हा । दिन भर वो मजूरी कर जिको वो कमावतो मिनखां ने घरां आवण सूं पैलां वीरा दस "टेके" खानी टुर

पड़ता । जद बो पी–पी'र आपरा होस गंवाय बैठतो, सगळा दारू-बाज टुर चुक्ता, बी घड़ी कलाल बीने धक्का मार बारै करतो। पछ बो गिरतो–पड़तो घरां पूगतो । ई हालत मांय दिलो-दिमाग माथै बीरो नियंत्रण कीकर रैंवतो ? भोळा टाबरां अर लुगाई सूं थपड़–मुक्का करना बीरे खातर छोटी–मोटी बात ही।

अर गोमती ! वा बापड़ी कांई करतो ? धणी रे अत्याचारां सूं धूजती वा आपरा ओठ सीयें रैवतो । पण कद नांई ? जुलम अर सितम री बी तो कोई हद होवे है । विद्रोह री वासतो खातर प्रतिसोध री एक चिणख हीज घणी होवे ।

□

आपरे वास माय कदेई गिरधारी मोटो सेठ मानीजतो। बजाजी रो धधो बीरो घणो चालतो हो । दुमंजिलो घर रो घर... ले–दे'र भरयो–पूरो कुणबो अर वास माय खासो रुतबो । छोटा-मोटा सैं सनमान देवता ।

फेर एकर यार-भायलां मांय बैठ'र दारू री दोर चालयो तो फेर चालतोहीज रैयो । जाम सूं-जाम टकरावता रैया। होळै-होळै गिरधारी रो समूचो माल–पाणो दारू री भेंट चढयो.... पण गिरधारी ने होस को आयानी । दिनूगे....दुपारी ....सिझ्यां अर रात चारूं पोर जद दारू रा गुटका चाले तो होस आवे बो कीकर? जद खुद फकड़ होग्यो तो भायलां बी मूंडो मोड़ लियो पण गिरधारी मूंडो को मोडयोनी दारू सूं ....स्यात जुगल प्रेमी जियां बिये दारू रो सागो निभावण री कसम खाय लीनो ही।

□

गोमती आखर कद तांई मोम जियां पिघळती रैवती ? वा बी तो हाड–मांस री जीव ही । बीरो पेट बी टैमोटैम रोटी-पाणी

मानो। टाबरां री सूरत वीरी आख्यां सामी फिरती! हमें सोनी री माटी पर किया धाळ्ज माथे अर निस्चय कर लीनो के हमें वा अत्याचार को मेल्हेनी। वा हमेस-हमेस खातर टाबरां ने लेय'र गिरधारी री निजर सूं दूर होय जासी....इत्ती दूर सामी परी, जठे वीरे धणी रे करमा री छिया नी पूगे। वा मेहनत-मजूरी कर लेसी।..पर एक दिन गोमती आपरो धणी ने सुणाय दीज दियो—

"थे सुण लीजो जो।..आ रोजीने री राड मने को सुहावे नी।...थाने हजारां-हजार वार म्हे कै दियो के थे पीवणो छोड देवो पण थे वा मानी नी। आ बाळणजोगी दारू म्हारी गिरसती ने उजाड नाख्यो है। हमें म्हे थाने का राखू लोनी। थे जित्तो चावो पियो....जियो....या मरो। म्हे हमेस खातर थारो घर छोड'र जाऊं हूं।....जिया वी होसी म्हे मजूरी कर टाबरां ने पाळ लेनूं। दो टुकड हीज मिळसी, पण हिवडे माय सायति तो रैसी।"

गोमती रो इत्तो कैवणो हो के गिरधारी जिया चमक्यो "कांई कयो थे....तूं घर छोड'र जासी परी?..मतळब के तूं घर री नाठ जासी? मने वता तो सरी कुण है थारो मासूक जिके सागे नाटसी तूं?..."

गिरधारी री कुबुद्धि अरथ रो अनरथ कर दीनो। वियै गोमती रा भींटा झाल'र धरै माय पटक्यो अर दे मुक्का....दे थापड....दे लात वीरी दुरगत कर नाखी। ऊपर सूं मा-बैन री गाळ्यां रो सुमार को छोड्योनी। देखता-देखतां सगळो वास भेळो होग्यो। टाबरा टीगरां खातर तमासो बणग्यो।

गोमती रा तो भाग हीज फूटग्या। रोजीना तो वीरो धणी

यारा मायं तमासो वणतो, ग्राज वीने वी वीयें तमासे रो जोडीदार वणाय नाख्यो । गोमती मांय जा'र वांडो ढक लियो । अपघिरणा माण अर घिरणा री चिणगारयां वीरे हिवड़ै मांय फूटण लागी। लुगाई जात री निरबलता माथे वीने किरोध आय रियो हो। आ वात तो गोमती खातर डूब मरण जिसी ही । हमे वीमें जीवण री लाळसा वी जियां खतम होवण लागी ।

□

वठोने गिरधारी ने सरूर उतरतो लाग्यो । वो पूठो ठेके खानी टुरयो । पग तो सूना हाईजी । ठेके मांय घुसणो चावता-हीज वो मूंडे भार धरती माथे आय पड़यो । कलाल री निजरां वी माथे कमती ही अर वीरे गूंजे मां सूं पड़या रूपियां माथे घणी ही । विये झट करता गिरधारी ने सायरो देय'र उठायो। अर मांय लेजाय'र सनमान सूं बिठायो अर पेश करया जाम माथे जाम ।

गिरधारी जद समूचो मदहोस होयग्यो, कलाल वीने हिलाय-डुलाय'र देख्यो अर चौकादार ने आंख रो इसारो कर दियो। वीरे सागे वी वोईज होयो जिको दूजां दारूबाजां सागे हुवतो। दो मिनखां वीरा हाथ-पग झाल्या अर बारे गळी मांय लाय पटक्यो । जद तांई पईसा खुंजे मांय होवे तद तांई वठे सलाम ठोकीजे....ओहीज वठेरो कायदो हो ।

□

जद ईने-वीने चूं-चपाड़ सुणीजो तो गिरधारी ग्रांख्यां खोली । धरती माथे पड़यो देख'र वीने अचंभो होयो । माथे पर जोर दियो तो रातग्राळी सगळी याद आयगी । समझतां ताळ को लागीनी के घणो पीवण रो नतीजो सामे है । हमे वीरी इज्जत-ग्राबरू कठै गई ? आवता-जावतां लोग वीने देख'र थू-थूकरे । वो

म्हकरतो उठ्यो अर चालयो घर खानी।

गळी माय मुडतांहीज वीये वाड़े सामे लोगां री भीड देखी, तो वीरो हिवडो अजाण शके सू कपीजग्यो। वासआळा मे वी माथे टेढो निजरां नाखता दीस्या। वीने हमे ठा पडयो के समाज माय वीरां कितो हेठी होयगो है। सगळी शान-सौकत धूळ माय मिळगी है। हमे वीने गोमती रे सबदा माय सचाई लागण लागी।

घर मांय सूं टाबरां रो रोवणो—कूकणो सुणीज गियो हो। पण वीरी समझ मांय को आयो नी के काई बात है? वीये रामेसरी काकी सूं पूछ्यो तो पडूत्तर मिळयो—"खुद जाए देखने हापी ठा लाग जासी के कांई होयो है? हमे पूग्यो है जद समूचो नस्मीभून होयग्यो।... कठे पाणीहीज को मिल्यो नी थाने डूब मरण खातर?"

विस्मय सूं वीरी आख्या फाटगी। काळजो धक सू रैयग्यो। वीने विस्वास को होयो नी के गोमती आपरे निस्चय खातर जान री बाजी वी लगाय सके। वो चमगूगो सो बणयो गोमती री लास ने धूग्तो रैयो। इते माय कोई कैयो—

"देख लियो भाया? काई अजाम हुयो थारे दारू पीवन रो?... थारी घरवाळी री मौत?....ई रे सिवाय वा थारडी करनी वी तो कांई करती?....ई रो जिमेदार तू है तू।"

उडियो-उडियो सो मूंडो लियें गिरधारी देखतो—सुणतो रैयो।....नाना सा दोय आंसू वीरी आख्या सू चुय पडया।.. जिया कैय रिया होवे के 'गोमती थारी लास री सोगन।... म्हे हमें दारू ने हाथ को लगाऊ कोनी।"

दारू री लाय गिरधारी ने पूरी जूण बाळती रैयी पण म्हे दारू छोडण रे उपरान्त ही वीने बळती पडसी प्रायश्चित री आग माय....हमेस-हमेस।"

अदूरी कहाणी

परीक्षावां खतम हुई । चालो माथे सू ओ भार तो हट्यो। म्हैं विचारयो—दिन अर रात परीक्षावां रो भूत माथे चढ़ियो रैवतो अर उणरे निवारण खातर जाडी-जाडी पोथ्यां मांय मायो मारणो पड़तो ।

आज सबू पैली म्हैं लारला समूचा कार्यकरमां ने रद कर नूवी दैनदणी तैयार कीनी— 'तड़के चार बजी री जगां नऊ बजो उठणो .... कलेवो कर आडोस-पाडोस माय रामा-स्यामा करण नै निकळणो.... दुपारे खा-पी'र लाबी ताण सुवणो अर पछै रात नै घणी ताळ यार-भायळा माय बैठ'र अठीने-उठीने री हाकणी ।'

हालाकि ओ कार्यकरम दूरदराज परणाई बेटी रे चार दिनां खातर पीरे आवण माथे बणायो गयो कायकरम जिसो हो.... आ बात म्हैं आछी तरा जाणतो हो। बिया वी नोकरीपेशाआळा मिनख आपरी आदत रे मुताबक ना तो दिन मांय सूय सकै अर नाईज रातिजोगो कर सकै .... पण मूड बदळान खातर ईसो काई करणो जरूरी हो।

दुपारे रो बखत । बारे चिलचिलावतो घूप अर बळती लू रो रेळो। पण कमरिये मांय ठण्डो वातावण हो। इणरे बावजूद

आंख्यां मांय नींदड़ली रै परवेस री मनाही ही स्यात ! एकटक देखतो म्हैं कमरे री छात सूं टंग्योड़े पंखे री घूमती पांख्यां गिणण री कोसिस कर रियो हो। पण माथे मांय अणगिणत विचारां री रेलमपेल माच्योड़ी ही।

एक विचार भी वां उठियो के अरसे सूं म्हारी कलम सूं काईं नूवी सिरजणा नीं हुई है। इयां तो जूण सूं जूझतां छिण भर रो वगत भी काढ निकळूं के काईं लिख-पढ सकां। घर सूं दफ्तर अर दफ्तर सूं पूठा घरे। एक मसिनी चक्कर चालतो रैवे दिया। दफ्तर मांय माथा री खताड़ खावता ढीठा होयग्या अर घरे लुगाई टाबरां री फिरमायां सूं गिरस्ती री गाठयां उलझती रैवे।

घणो सोच्यो पण कोई नूवी घटना के बात सूझली निजर नीं आई, जिके माथे कहाणी री सिरजणा की जाय सकती। आ बात भी माथे मांय ही के गर कोरो लिखण खातर लिख नाख्यो तो रचना 'धन्यवाद' सागै पूठी आय जासी। ई खातर प्रकासक री दिरस्टी सूं सोच'र लिखणो जरूरी हो।

"बाईसा रोटी देवो !" अचणचेत इयां सबदां सूं म्हारो ध्यान भंग होयो।

"हूं ...। बोईज छोरो दीसे..." म्हैं सोच्यो।

"काईं देवो बाईसा ..थारो धरम होसी –गुण गासूं थारा...."

फेर हेलो आयो कानां मांय।

आज भळै आयग्यो भी नासपीटो।....काल तो मना करी ही।.... पतो नीं ऐ कठैऊ चालता आवे है रोजीना। घणो रीस आई। सारो मूड चौपट कर दियो इये निगोड़ै।

"थारो बाप धरग्यो हो काईं अठे जिको तूं रोजीना मांगण आवे ?" बड़बड़ावता म्हैं बारै खानी चाल्यो। कूंटो खोल'र

मोरे री रंग काळो हो के सरीर माथे चिपक्योड़ी मैल री परत ही - जिको बीरै जलम पछै नीं नहावण री मजबूरी दरसावती।

म्हारिये मांय घुमताईज एक विचार फेर आयो — "ई छोरै नै कहाणी नीं लिख सकूं काई?....कहाणी रा नायक ईयैनेहीज बणाऊं तो काई हर्जो है ?"....अर कहाणी रो प्लाट मिलण री खुसी मांय बीरै प्रति म्हारै मन मांय घणी दया उपजण लागी।

म्हैं पूठै पग थांडै आयो अर देख्यो—बो थाडै पैडै माथे एक रिये री छिया मांय बैठ्यो हो ..उदास। स्यात दूजे बाडै बी गै माळिया अर भिड़क्यां रै इलावा की नीं मिल्यो हो।

"ओ छोरा !...." म्हैं बीनै हेलो कर्‌यो। पैली तो बिये भेली निजरां सूं म्हानै देख्यो पण पछै "स्यात काई मिलसी" रै लालच सूं धीरा पग म्हां खानी बढण लाग्या। नेड़ै आ'र बो भुरा-गार ऊभग्यो।

म्हैं पूछ्यो— "रोटी लेसी काई ?" रोटी रै नाव सूं बीरी आंख्यां री चमक म्हानै बढती लागी। म्हैं मांय जा'र दो रोटियां ले'र आयो अर बीनै देवण लाग्यो— "लै रे! .. बात कर जाईजे ....अर रोटी लेय जाईजो।"

रोटियां ले'र जोई बो चालण लाग्यो बरदम म्हैं बीनै टोक दीनो — "आच्छ्या ! .... इयां कद ताईं मांगतो रैसी ?"

म्हारै सवाल रो पडूत्तर बीरै कनै नीं हो स्यात। बो फुरबाल सा म्हानो देखतो रैयो — टुकर-टुकर!

मनै लाग्यो बीरी आंख्यां म्हासूं पूछै है — "थे म्हनै काम देस्यो काई ?"

म्हैं दूजो सवाल कर्‌यो — "थारै घर मांय और कुण-कुण है रे ?"

ई माथै छोरो उदास होग्यो— "म्हारी मां है।"

देख्यो—सामे बोईज फटीचर छोरो हाथ मांय कटोरो भाले हमेस जियां ऊभो हो । आज बीने आवण माय थोड़ो मोड़ो होयग्यो हो । हमेस तो वो दिन-धोळे हीज आवतो हो ।

"कांई है रे ?....थाने ओईज घर लाधे है कांई रोजीना ?... आवे जदेईज दे देवां हां ई खातर काई ?....चाल भागजा .... कोई दूजो घर देख जा'र ।" म्हैं बीने देखताहीज बरस पड़यो । पण बो सिरक्यो कोनी । म्है बीने गोर सू देख्यो – बोरी आंख्या मांय पाणी आयग्यो अर बीरे हाथ रो कटोरो धूजण लाग्यो । सूखे कठा कांई गिटण री कोसिस मांय बो मरतो-डूबती आवाज माय फेर बोल्यो—

"बाबूजी !....पाणी हीज पाय देवो....घणी तिस लागी है।"

एकर तो मन मांय आयो के कैयदू – नाठजा कोनी पाणी-वाणी अठे ।.... रोटी नीं तो पाणी होज पाय देवो !.... कांई ना काई देवो अवस ईये लाडेसर ने । .... पण ओ नतीजो बीरे भोळे मूंड रो हो के म्हा खुद रे सस्कारां रो के म्है बीने मना को कर सक्यो नी अर मांय जा'र पाणी री बालटी भर लायो ।

बोये एक नी....दो नी....पूरा चार लोटा पाणी गिटकाय स्यात आपरी भूख वो पाणी सूं मिटावणी चावतो । दानवीर जो बैठया है अठे .... कांई पतो दूजे बां पड़तर मिळे ? अर बीरी समझ माय नीं आवण न्यारी । म्हैं सोचण लाग्यो ।

'थे जुग-जुग जियो बाबूजी...." कवतां मने लाग्यो जियां पाणी पी'र बीरे पगां म है । म्है बीने लारे सूं देखण लाग्यो– प तांई बन्द करोड़ी छतरी जीसो ल माथे बिना बाजू रो फाटोड़ो बि

दो दिना सू वो पूठो आयोहीज कोनी आ बात तो म्हैं भूलग्यो हो। म्हारां रै सामे पड़ी अखबार रा आखर मने धुंधळा दीसता लाग्या। दो दिन पैलां री बात म्हारे सामे चलचित्तर जिया घूमण लागी

बीरो भोळो मूंडो ... नागा पग.... कटोरो लियां धूजता हाथ....अर पूछनी बीरी आंख्या के काई थे मने नौकरी देय सको?

दफतर जावता वखत सगळे मारग माय ऐईज सवाळ म्हारो लारो करता रिया —

"बीने चोरी करण री काई जरुत पड़गी ?"

"वठे बीरी मा बीमार तो नी ही ?"

"होय सकै बीरे इलाज खातर बीने पईसां री जरुत श्राय पड़ी होवे ?"

"पण वो कीमू इलाज खातर पईसा माग वी तो सकतो हो?"

"वा रे वा ! रोटी तो बने कोई देवतो कोनी हो... पईसा कुण देय देवतो ?"....

"पण म्है तो बीने दो रोटयां दीनी ही .. अर दूजे दिन भळै रोटी देवण खातर बुलायो हो ?"....

"घणा आया रोटयां देवणआळा... दो रोटया दे'र थे बीने खरीद तो को लियो नी?.... थाने तो आपरी कहाणी रो 'प्लाट' चाईजतो हो ... अर ई खातर ही थे बीने आपरी कहाणी रो नायक बणावणो चायो हो ?....ईमू घती थे काई कर दियो वी खातर? ... बोलो ? काई पड़ूतर थां कने ?....

म्ह रे ईये सवाळां रो पड़ूतर म्हारा कनै कोनी हो स्यात !.... पण माय वठै टिमीजण लाग्यो थे आ कहाणी री अधूरा रैवणी।

□□□

उजाळो

काम करतां अचणचेत टावरां री मां री–सिकल मा
वीजळी जियां चमकी अर झट करतो म्हैं ो।
छंडकावतां कैयो हो—

"पूठा आवतां आटे रो जुगाड़ क
नै रोटी–बीजो नी बणेलो।"

गूं जै मांय हाथ घालतो रु
"आज तारीक पचीस हुईगी...क
आटो लेवणोईज पड़सी। मतल
छोटे–मोटे बीजे समान री जरु
रूपिया पचीस लाधे जद काम

साइकल रो पैडल मार
गाळ आवती रैयगी। आ
होयग्या साइकल रो दुःख दे
तनखां मां सूं।

तनखा री ओळू अ
छोटकी रा गाबा सैं,

उगतो सूरज ढळतो सूरज/

पूरे के 'फीस देवो नी तो मास्टर जो टोकेला'....'दूध आळो दस तारीख नेईज कैयग्यो हो— 'सारलो हिसाब आवतो पैली माथे नी करोला तो हूं दूध को देलोनी।" खरचे माथे खरचो...पर करजे माथे करजो! तनगा बापड़ी एकली अर बीने ब्यावणियां मोटे मूं मोटा खरचा! बापड़ी कीरे-कीरे सागे हाले?

डावड़े मारग फटग्याईज सामे राजेस दीख्यो। म्हांस्यां फेर'र निगरतण लाग्यो के बिये हेलो दियो जद रुकणो पड्यो।

"कठै रैवे भायला?.. दीसेईज कोनी?....कित्ता दिनां पछे मिलयो है?" बीये एकेसागे कित्ताईज सवाल पूछ नाख्या।

"थारी नगरी मांईज रैवा हा।" म्हैं बात खतम करणी चाई।

"म्हारी नगरी माय रैवतो तो म्हारे घरे तो आवतोईज।.... हमे तो थाने म्हारे सागे म्रवारईज चालणो पड़सी।" बीये कैयो।

'फर आसू भायला....हणे तो थोड़ो जरुरी काम है।" म्हैं कैयो पण बीये म्हारी बात अणसुणी कर दीनी—

'तू म्रबार नी-नकोर नी कर सके। थाने हालणोईज पड़सी।...म्हारे घरे नू वों पावणो आयो है...बीने तो देखतो जाव।"

"कुण नूवों पावणो?" म्हैं इचरज सूं पूछ्यो।

'अरे तू तो पाच टावरा रो बाप होयग्यो...हणेईज को समझयो नी?....म्हारे छोरो होयो है।....क्या समझयो?"

"फेर तो घणी बधाई हुवे थाने।" म्हैं मुळकता कैयो।

'बधाई अठे नी घरे चाल'र लेमूं।" कैवतां बिये म्हारी साइकल रा हैंडल आपरे घर खानी मोड़ लियो।

□

घर माय बड़ताईज राजेस री छोटकी छोरी "काको सा

उजाळो

काम करतां अचरणचेत टावरां री मां री सिकल माथे मायं बीजली जियां चमकी अर भट करतो म्हैं ऊभग्यो। बीये पीयो छंडकावता कैयो हो—

"पूठा आवतां आटे रो जुगाड़ करता आया....नीं तो सिझया ने रोटी-बीजी नीं बरणेली।"

गूंभे मांय हांथ घालू तो रूपिया पांच लाधे। सोचरण लागूं-"आज तारीक पचीस हुईगी....कम-सूं-कम पाच दिनां खातर तो आटो लेवरणोईज पड़सी। मतलब के रूपिया बारे-पदरे चाइजे !.. छोटे-मोटे बीजे समान री जरुत वी पड़ सके, जिकी न्यारी।.... रूपिया पचीस लाधे जद काम सरे।"

साइकल रो पैडल मारताईज चैन नीचे नीसरगी। जीव माथे गाळ आवती रैयगी। आ बापड़ी बी काई करे ? छऊ मीनां होयग्या साइकल रो दुःख देखतां....पण रूपिया दस को नीसरे नी तनखां मां सूं।

तनखा री ओळू आवतांईज घणी बात्यां याद आवरण लागे। छोटकी रा गाबा सैं फाटग्या.... मोटकी इस्कूल जावतां, रोजीना

पूछे के ''फीस देवो नी तो मास्टर जी ठोकेला'....'दूध आळो दस तारीक नेईज कैयग्यो हो—''लारलो हिसाब आवतो पैली माथे नी करोला तो हू दूध को दूंलोनी ।'' खरचे माथे खरचो....अर करजे माथे करजो ! तनखा बापडी एकली अर बीने ब्यांवणिया मोटे सूं मोटा खरचा ! बापडी कीरे-कीरे सागे हाले ?

डावड़े मारग फटताईज सामे राजेस दीस्यो । मांह्यां फेर'र गिसकरण लाग्यो के बिये हेलो दियो जद रूकणो पडयो ।

''कठै रैवे भायला ?....दीसेईज कोनी ?....कित्ता दिनां पछे मिलयो है ?'' बीये एकेसागे किताईज सवाळ पूछ नाख्या ।

''थारी नगरी मांईज रैवा हा ।'' म्हैं बात खतम करणी चाई ।

''म्हारी नगरी माय रैवतो तो म्हारे घरे तो आवतोईज ।.... हमे तो थाने म्हारे सागे ग्रबारईज चालणो पडसी ।'' बीये कैयो ।

'फर आसूं भायला....हूणे तो थोड़ो जरूरी काम है ।'' म्हैं कैयो पण बीये म्हारी बात अणसुणी कर दीनी—

'तूं अबार नी-नकोर नी कर सके । थाने हालणोईज पडसी ।....म्हारे घरे नूंवों पावणो आयो है...बीने तो देखतो जाव ।''

''कुण नूवों पावणो ?'' म्है इचरज सू पूछयो ।

'अरे तू तो पाच टाबरा रो बाप होयग्यो...हणेईज बो समझयो नी ?....म्हारे छोरो होयो है ।....क्यो समझयो ?''

''फेर तो घणी बधाई हुवे थाने ।'' म्हैं मुळकता कैयो ।

'बधाई अठे नी घरे चाल'र लेसूं ।'' कैवता बिये म्हारी साइकल रा हैंडल आपरे घर खानी मोड लियो ।

□

घर माय बड़ताईज राजेस री छोटकी छोरी ''काको सा

...थारी भोजाई घणा दिना सूं कैवती ही के नूंवी साळ मांय नूंवो सोफो ठीक रैसी ।"

म्हैं कैयो— "काई पूछे भायला ! थारी सगळी चीज्यां बढ़िया है.... थें तो सुख-सुविधावां री सगळी चीज्यां भेळी कर लीनी है ।"

राजेस बात मरू राखी – "देख भाईडा ! .. घणो सोच-समझ'र चालणो पडे जद गिरस्ती आछी तरां चालै। .. पण सबसूं पैली बात तो आ है के छोटो परवार'होज आदर्स परवार बण सकै। ..मतळब के परवार छोटो तो खरचो वी कम अर खरचो कम होसी तो ग्रामदणी रे मारू टाबरां रो पालण-पोसण अर भणाई लिखाई वी आच्छी तरां नू होय सके ।"

भोजाई चाय बणाय लाई अर माळे री तसतरी रागता कैवण लागी ' इयां तो दोना टाबरां रे नाव रा बैंक मायं न्यारा खाता वी खुलवाय दिया है ।"

भोजाई री बात राजेस पूरी करी- "बडा होसी जद इयारे नाव री रकम इयारेईज काम आसी ....छोरी रो ब्याव होवे जे छोरे रो काम धन्धो ।"

इत्ते मांय होड़े सूतो टाबर रोवण लाग्यो । राजेस वीने उठा'र मने भळाय दियो— "आ म्हारो नूंवों पावणो !"

वीने पुचकारता म्हैं पूछयो—"काई नाव है रे थारो ?"

भोजाई कैयो—"परकास नाव रारयो है ।"

म्हैं कैयो—"छोरे रो नाव परकास अर छोरी रो ज्योति । वा रे परकास अर ज्योति !.... राजेस रे घरे ना दिया उजाळो ई उजाळो होयग्यो ।"

भाभी....राजीगा आया" केवती म्हासूं चिपटगी । छोरी ने उठा'र म्है लाड लडायो । भोजाईजी "रामराम" करतां...थोड़ूं पेली बा म्हांई सासू नै बात नाखी –

"आज तो म्हारा किण भूल पड़या देवरजी ?...."

बीं री पडूत्तर राजेस दीवो – "म्हारा बैवसाये भाग'र लायो हूं । भो भो भाज दी भी आवणो ।"

म्है कैयो – "घर-गिरस्ती माय फस्योड़ा रैवां....काई करां भोजाई टैमईज कोनी मिलेनी ।"

राजेस मठारतो म्हारी बात झालली – "अरे गिरस्ती तो पैलां म्हारी ई भाइजे म्हूं के थोमाय गृहस्थीज फसगो पड़यो ?....म्हाने देवर जी ब्याव थारां पैली होयो पण टाबर हालताई दोईज !.... घर मूं नीं मानेंनो ई दूसोटे टाबर पछै तो म्हैं परिवार कल्याण रा नेसपना साथै अमल भी कर लीनो ।....थारी भोजाई तो कैवती रैई के तीन टाबर तो होणाईज चाईजे । पण म्हैं पक्को निसचै कर लियो के टाबर तो दोईज घणा....एक छोरो अर एक छोरी.... निहाल करगी तो इताईज घणा ।"

राजेस री बातां म्हारे हिवड़े मायं जबरी चोट करण लागी । म्हैं ईसो क्यू नी सोच्यो ?....राजेस रो ब्याव पर्ला होयो अर म्हारो पछै... राजेस रा दो टाबर अर म्हारा टाबर पाच !... नू वे बरस नूवों कलैंडर !

म्हारी निजरां राजेस रे घर री एकी-एक चीज ने देखण-परखण लागी अर म्हासूं पूछण लागी–या सने फ्रिज है....के टीवी है....सोफो है....के इसकूटर है ?....घर रे घर री इत्ती चोखी सजियोड़ी साळ है ?

"इत्ते मांय राजेस रा बोल म्हारी तद्रा तोड़ नाखी- "काई भायला ! .... सोफो पसंद आयो कांई ? कालईज नूं वो लियो है।

...थारी भोजाई घणा दिना सूं कैवती ही के नूंवी साळ माय नूंवो मोको ठीक रैसी।"

म्हैं कैयो— "काई पूछे भायला! थारी सगळी चीज्यां बढिया है.... थैं तो सुख-सुविधावां री सगळी चीज्यां भेळी कर लीनी है।"

राजेस बात सरू राखी – "देख भाईडा! ... घणो सोच-समझ'र चालणो पडे जद गिरस्तो आछी तरा चालै।... पण सबसूं पैली बात तो आ है के छोटो परवारहीज आदर्स परवार बण सकै। ..मतळब के परवार छोटो तो खरचा वो कम. अर खरचा कम होसी तो ग्रामदणी रे मारू टाबरा रो पालण-पोसण अर भणाई लिखाई बी आच्छी तरा सूं होय सके।"

भोजाई चाय बणाय लाई अर माडे री तसतरी राखता कैवण लागी 'इया तो दोना टाबरा रे नाव रा बैंका माय न्यारा खाता बी खुलवाय दिया है।"

भोजाई री बात राजेस पूरी करी- "बडा होसी जद इयारे नाव री रकम इयारेईज काम आसी छोरी रो ब्याव होवे के छोरे रो काम धन्धो।"

इत्ते माय हीडे सूतो टाबर रोवण लाग्यो। राजेस बोने उठा'र मने भळाय दियो— "आ म्हारो नूंवो पावणो!"

बोने पुचकारता म्है पूछयो—"काई नाव है रे थारो?"

भोजाई कैयो—"परकास नाव राख्यो है।"

म्है कैयो—'छोरे रो नाव परकास अर छोरी रो ज्योति। वा रे परकास अर ज्योति!.... राजेस रे घरे ना जिया उजाळो ई उजाळो होयग्यो।"

राजेस जोर सूं हासी रो ठाको लगायो – "थारी बात मांय कोई सक कोनी भायला !.... पए मूळमन्त्र तो ओईज है के "घणा टावर घणो दुख अर थोड़ा टावर घणो सुख।"

□

राजेस रे घरां सूं टुरतांईज मारग मांय वीरी वातां म्हारे माथे मांय घूमण लागी। कित्तो सुखी है वो अर कित्तो दुखी हूं म्है।.... "घणा टावर घणो दुख ....थोडा टावर घणो सुख"....राजेस रो मूळमन्त्र याद आवतांईज घणी वातां याद आवण लागी।

लारले दिनां एक परसंगी रे ब्याव माथे जावण रो मोका आयो हो.... जद पैली तो घर मांईज माथा लाग्या।.... कीने लारे छोडां अर कीने सागे लेवां।.... पछे लोरी माथे चढ़ण रो वगत आयो तो ऊपर सूं नीचे तांई मिनखां सूं साठो भरियोड़ी लोरी ने देख'र माथो चक्कर खायग्यो।.... एकलो होवतो तो झटकरतो चढ जावतो लोरी माथे ....पण टीगरा री पूरी फौज रे सागे कियां चढतो लोरी माथे ?.... एक लोरी ने छोडयो तो दूजी लोरी सिफ्यां तांई ऊ म्राई नो।.... रोवता-पोटतां घरां पूठो आवणो पड़्यो हो।

टावरां री र्‍ां री सिकल देखूं तो दिनोदिन नीसरती लाधे। जद-जद वीने असपताल दिखावण खातर धेवू तो वा एकईज पडूतर देवे— "कोरो रूको वणा'र धरणो है तो भलेईज चालो परा.... दवाया खातर तो था सने पईसा टका लाधेईज कोनी।"

सामे भ्रावतो मोटर रो पूंपाड़ी सूं म्हारो ध्यान टूटे तो देखूं के म्हैं परवार कल्याण केन्द्र रे सामे ऊभो हूं। बडा वडा आखरा माय लिख्योड़ो है– 'जीरा होवे टावर कम....वीने वरेई ना सागे गम"

[illegible] एक फैसलो कर लेवूं....पर म्हारा पग बेगीगी [illegible] माय डागदर साब रे कमरिये खानी वहण

□□□

एकै एकै इग्यारह

म्हारी आंगणा टाइप मशीन माथे फटाफट चाल रैई ही–टिक टिक टिक ! …… पर पानो पूठो काढ्यो अर दूजो पानो लगा'र रावर पुनाव दिया । . . हाथ सूं लिखियोडा पाना गिणूं— दस पेज रो बड़ाणो . जिके माय सूं अबार तक टाइप हाया है ।

भीत माथे टंगियोड़ी घड़ी माथे निजरा नाखूं – पूर्णा दस बज्या है । सोचूं—पन्द्रा मिनट बाकी रैया है—दफ्तर रो टैम …… है । दोय-चार पाना भळै काढ लूं । इत्त माय बाड रो …… खटकोजे । उठ'र चिटकणी खोलूं ता देखूं सामे भीखजो ऊभ्या है ।

"राम-राम बाऊजी !" कैवता वे माईने टुरिया आवै ।

"आओ सा भीख जी ! . . कोकर ? .... ठीक-ठाक ?"

…… ईं पूछूं ।

"म्हारे तो सै ठीक है सा.... थेईज सुणावो ।" वै कुरसी माथे …… बैठता पूछै ।

"बस गाडी चाल रैयी है समझलो...." कैवतां म्हे धरमेल ने …… हेलो करूं – "सुणे है काइ ? ....भीखजी आया है ।"

"अबार आऊ ।" कपड़ा नपीड़तां विये पडूतर दियो ।

खाकी थिफ़ाफे मायं सू एक कागद काढ'र भीखजी म्हा खानी रकारो—…पड़ो तो बाळजी ईने ।"

"काई कोई जीसा रो पेसण रो कागद आयग्यो काई ?"

"कठै ?…वीरो तो अबार तक जवाबईज को आयोनी ।"

"तो फेर कांई है ?…. भवर री नोकरीआळै केस मांय कोर्ट रो फैसलो तो कोयनो ?"

"वोईज अबार तक तो अधर माय हीज लटके है … ओ तो नोटिस है .. आपांरी जमीन रो नोटिस आयो है ।"

म्हे कागद पढयो । …. तहसीलदार साव'रे दस्तकतां सूं लिखियोड़ो हो– "थैं सरकारी जमीन माथे कब्जो कर'र कच्चो मकान चिरण लियो है जिको गैर कानूनी है. .. थाने नोटिस दियो जावे के ई जमीन रो कब्जो छोड देवो…. नी तो थाने पैनल्टी रेट सूं जमीन री कीमत भरणी पड़सी …. अर थैं फलां तारीक ने हाजर होय'र आपरो जवाब पेस करो ।"

म्हे कैयो— "ओ तो पैला जिसो नोटिस फेर दियो है …. घबरावण री बात की कोनी …. कागदी कारवाई है सैं ।"

भीखजी बोल्या-"एक बात माथे थैं ध्यान दियो कोनी स्यात.. ई माथे दस्तक तहसीलदार साब रा है …. अर पैली आपां रने जिता वी नोटिस आया हा वै सैं कोलोनाइजेसन डिपारटमेन्ट सू आया हा ।"

"हां … आ बात तो है….."

"तो ईरो मतळब होयो के हमे जमीन सरी छेतर मांय आयगी है….अर पटा-घटा वी अबे तो बेगोसी वरण जासी स्यात ।"

भीखजी कैवतां मुळकरण लाग्या । वीयारे मुळकरण रे भाव न्हैं समझग्यो के इयां ने मोकळी खुसी होयरयी है के कब्जे री रे नियमन मांय हमे घणी ताळ को लागेलोनी ।

'दब्तो सूरज/एकं एकं इग्यारह/८०

इणें मांय भरमैन पूरसो आयगो । खमा-खमा करतां म्हारे हाथ मांय कागद देखता वैंरे पूछ्यो —

"थां कांई रो कागद है ?... टाईप करवावण सारू लाया हो के ?"

"नीं-नीं.... टाईप-वाईप तो करवाणो नी .... ओ तो आपां री जमीन रो नोटिस आयो है . बाऊजी ने दिखावण ने लायो हूं।"

भीखजी री बात खतम होवण सूं पैली सुणतां म्हासूं मुळका-णा होई— "म्हारी समझ मांय को आवेनी के थ की चक्कर मांय पड़ियोड़ा हो ?.... दो-च्यार दिनां सूं देखूं हूं के सुवै- सिझ्झया टाईप मांये टिपटिप करता रैवो .. कोई पईसा- टक्के रो काम है के थांरी बेगार हीज गळे आय पड़ी है ?"

म्है वीनें समझावणो चायो — "बात इयां है के ओ काम म्हारो खुदरो हीज है समझो ।.... खुद री लिखियोड़ी रचनावां रो म्है कहाणी संग्रै प्रकासित करावणो चाऊं .... वीरो हीज किताब टाईप कर रियो हूं।"

"थांरी तो थेंईज जाणो .... म्हारे तो पल्ले को पड़ेनी"

कैंवती वा फेर भीखजी खानी मुड़ी — "और बास मांय तो सै टीका-टाक है ? .... एक'र तो म्है काल बास खानी आय रिया हा .... म्हारो मन घणो उदास हो रोय –तीन दिनां सूं'.... सोच्यो चाल'र सगळा सूं मिळि आऊं .... पण ऐईज मना कर दियो के थागे तो थारो मन उदास है....फेर बठै जासी तो...."

भीखजी बीरी बात ने बीचाळै काटतां कैयो— "थेंई बैनजो गैली बातां करो । थें आया करो .... मन ने इत्तो छोटो करसो तो कियां काम चालसी ?.... थें आय'र देखो रो सरी .... हमें तो घर-घर नळ आयग्या है .... बीजळी रा खम्बा बी लाग

रिया है.... दोय-च्यार दिनां मांय बीजळी सगळै घरां मांय आय जासी।"

भीखजी आपरी रो मांय बोलता जा रिया हा पण म्हारी निजरां तुलछी रे मूं डे माथे टिक्योड़ी ही।

म्हैं देख रियो हो के भीखजी री बात्यां रे सागै-सागै तुलछी री आंख्यां सूं टप-टप करता आंसू वैवणा सरू होयग्या है। म्हैं बीरे हिवड़े री इस्थति आच्छी तरा समझग्यो के बा भौतक रूप सूं तो म्हारे सामे बैठी है.... भीखजी री बात्यां सुण रैयी है.... पण बीरो मन अर ध्यान तो बी बास मायं रमियोड़ो है .... कठै गया परा वै दिन ! ....वो सुख !!....वा सायति !!!....ओईज सोच-सोच'र तुलछी रो दुख आंख्यां सूं चुवतो रैवे।

भीखजी आपरी बात माथे जोर देवतां- फर कंयो "थे बैनजी अवस आया करो.... आय जावो तो सै बासआळां सूं मिळ-मिळाय जावोला"

'बो मनफ लियो तो अठैईज मरे है के कोनै गयो परो ? .. म्हैं तो ई खातरईज को आयानी के बो होयो तो फेर कांई राड़नै घाल बैठे....जावां तो मिलण नै.... अर बठै जा'र मायो लाग जावे तो...." तुलछी कंयो।

"आईज तो बात है बैनजी ! .... थें बोसूं डरता तो आपरी जमीन बेच नाखो .... हमे बी बीसूं डरता रैसो कांई ?"

भीखजी री बात काटतां म्हैं कयो- "नीं-नीं.... इयां थें नीं केय सको.... पांच बरस बठै रैया बी तो हा म्हैं.... बठै रैवन मर्दई म्हैं बी सूं डरिया कांई.... बीरो तो धन्धो आईज है के गरीब बापड़ां री जमीनां माथे कब्जो करणो अर कोनै बेच नाखणो ... पण म्हारी जमीन बेचण री कारण तो बीसूं कांई छानो है ? ... जद बैनजी रो मनईज बठैसूं उचाट होयग्यो पछै बठै रैवणा सूं

काईं फायदो ? .... अर काल वो जद इयां चालण रो कैयो
रै एकईज बात कैयी के वाईज जगां जठे कामू रो एक्सीडेन्ट ह
...वाई जगां जठे बा तड़फती रैयी ....बाई जठे बा रमती-डो
...लारली क्यारयां मांय मटरां री फळयां तोड़-तोड़ खावती
इणरिये रे इस्कूल लारे जाय लुकती अर ....वोईज आंगणियो
वैईज बाड़ा जियां माथे बा बैठी-ऊभी "अ" "आ" मांडती रैव
...थारे सामे आवे तो जियां एक हूक सी उठे थारे काळजे माय
अर तूं कूकती कैवे के कठे सूं वी म्हारी कामू ने पाछी लाय दे
...वठे जावणे सूं काईं फायदो ?.... जिकी जगा रवण सूं खुद
जीवणो सोरो नीं होवे .... बी जगा ने छोडणो चोखो .... ज
काईज बात सोच'र आपारो जमीन वेच नाखी पछे वी वास मा
रावणसूं कांई मतळब ?.. वठे जावताईज थाने वाईज जमीन..
वैईज छपरिया वैईज क्यारयां.... पेड-पौधा. .. वैईज आडोसी
पाड़ोसी दीसेला.... तो सुणीजेली थारे कानां माय कामू री किल
कारयां !.... नतीजो ओ होवेलो के थारी उदासी पला नामू घणी
बढ जासी....अर थमेला कोनी थारा आसूं !"

"आ बात तो थारी ठीक है वाऊजी पण . .. जमीन वेचणी
को हीनी थांने.... हो सकतो के थोड़ी ताळ पछे बेनजी रो मन
वठे लाग जावतो...." भीखजी बात काटी।

"पण इत्ते मांय मनफूलियो आपरो सिट्टो सेक लेवतो तो
आपां कांई कर सकता? आपां नी तो बीमूं लट्ठ सूं लड़ सका....
अर नी कोट कचरी रा चक्कर काटता आच्छा लागता.... वो तो
नेरो दियो रैवे....थाणा-कचेरी तो बीरो पेसोईज है समभलेवो.."

"थारो बात बी ठीक है" भीखजी हकारो भरियो।

"साची पूछो तो भाई साब म्हाने घणो पछतावो आवे है....
...सैर माय तो आपणा .... सगळी सुविधावां मिलसी ....

म्हारे मांय वितृष्णा रा भाव सा आयग्या अर मूंडे सूं निकळ्यो—"हूंह.... कांई बात करे है तूं ?.... पैली तो खुदरी जमीन बेचण री बेगी करी .... हमे पाछा बठै जावण री बेगी करो.... अर फेर कांई गारंटी है के बठै जावताईज थारो मन भळे लाग जासी ?....खैर तूं कैवे है तो सोचसां..."

"ठीक बात है सा ....आच्छी तरां सूं सोच-विचार लेवो .... हमे म्हैं तो चालूं....दफ्तर रो टैम होयरियो है।" कैवता भीखजी बाड़े नीसरग्या।

म्हैं धरमेल ने कैयो—"म्हारो वी दफ्तर रो टैम होय रियो है ..तूं बेगी सूं दोय-चार फळका सेक ले .. . इत्ते माय म्हैं दो पाना टाईप कर नालूं ...."

"थें थारो काम कर'र दफ्तर वूय जावो.... म्हारो तो अवार मन को होयरियो नी रोटी-वीजी बणाण खातर .. . दोपारी ने माय'र खाय लिया।" कैवती घा मायो थाम'र गुरमी माथे पथलेटी जिमी होयगी।

म्है फटाफट खटाखट आपरो काम सरू कर दियो। आधा पानो होज होयो होवेलो के मिमकारया कर सुणीजी।

"ओहा... फेर मरु होयगी?...." कैवता म्है चालतो आगटरा यठैईज रोक दीनी अर उठ'र तुलछी खाने जाय बैठ्यो। मूंड आगे धरयो बीरो हाथ परो करयो तो देख्यो के [illegible] सूं [illegible] आमू गगळै मूंडे ने गोलो कर दियो है। म्है दोना हाथा सूं बीरा मुंडो पूछ दियो अर कैयो — 'गेला होयगा कांई ! थाने किला वार कैयो है थें थोडी समझदारी सूं काम लिया कर .... थांरी चीज कदैई पूठी आई थे ? [illegible] री [illegible] ता देर दी कर सका... पण किणी ई दुनिया सूं दूर जावे दीने पूठी कदै सूं

"बिया रो मतळब ओईज होवे के टाबरां री आतमा मरण पछे अठीने-उठीने को भटकेनी....वा तो बेगी सी फेर जलम लेय लेवे....अर रैयो सुफना रो बात ?....ऐं तो सैं मन रा खेल है....तूं थारी कांई कैवे ?... म्हाने कदेई तू बी खातर रोवता देख्यो ?.... पण कालईज वा म्हारे सुफना मांय बी आई ही...."

"साची कैवो...." तुलछी री आख्यां मांय जिया चमक सी आयगी ।

"और नीं तो कांई भूठ कैवूं ?....म्हैं देख्यो के पत्तो नी कोई असपताल जिसो जगा ही जठै वा बैठी ही....म्है बीने उठावणो चायो....पण वा म्हारे खोळे को आईनी....म्है कैवूं 'आव चाला....' वा कवे "को चालू नी!".. इतेमाय बीने उल्टयां होवण लागी अर डागदर मनें कैवे "भट करता दवाया लेय आवो...." म्हैं दवाया खातर नाठूं अर सोचूं के पतो नी आ बचसी के कोनी ? इत्ते मांय म्हारी आंख खुल जावे"

म्हारी बात खतम होवताईज बा फर घणी जोर सूं कूवण लागी ।

"अरे फेर सरू ?"

रोवता-रोवता बिये कैयो—"म्हैं जाणूं बा थाने बी घणी याद आवे ...पण थैं म्हाने कैवो कोनी....थें तो भाठो धर लियो मन माथे....पण म्हासूं को धरयो जावेनी....म्हारी बिनती है के थें म्हारो आपरेसण पूटो खुलाय देवो तो म्हारा सगळा दुख कट जावे ।"

म्हैं फेर बीने सात्वण देवण री कोसिस करी—"देख....आज-काळे टाबर बंद करण रो आपरेसण तो हरेक समभदार मिनख करवाय रियो है....पण थाप-थाप रे भागां री बात !....दोष

टावरां सू आपां खुस हा... फेर उम्मीद होई तो—थे सोच्यो के तीजो टावर कीकर सभसी खेर थारो वो दोस कोनी हो....एक खानी तो तूं इस्कूल चलावर्ती ही....दूजी खानी घर—परवारआळा वेड़ा कोनी हा थे तो ठीक हीज सोच्यो हो के दोय घणा....अर थें सें परवारआळा रे नीं—नुकर करण रे बावजूद आपरेसण कराय लीयो हमे फूटोड़ा हा—के आपरेसण रे आगले मीने ईज....कामू चालती रैयी ! ठीक बात है के थारो आपरेसण हमे पाछो खुलवाणो है....डागदर साव वी थाने विस्वास दिलाय दियो के आपरेसण खुल जासी अर पूठी थारी कोख भरीज जासी....तूं जाणे आपरेसण खातर चाईजे काळजो काठो....पण घड़ी—घड़ी रोवण—धोवण सूं थारो काळजो काच्चो पड़ग्यो.... परणाम सरूप हम्मे थारो जी सोरो रैवे कोयनी....लारली वार जद आपरेसण खुलाण खातर थने भरती करिया हो....तूं एक दिन पैलां असपताल सू नाठ आई ही ओ कैवता के थाने आपरेसण सूं डर लागे...."पतो नीं मर जावूं के जीवती पूठी आवूं" ...अर ईं खातर हीज डागदर साव कैयो हो के सबसू पैली मरीज रे दिल री हालत ठीक होवणी चाईजे....नीं तो आपरेसण मांय खतरो वापरसके ।"

म्हे देख्यो वा म्हारी बात गौर सू सुण रैई ही म्हे फेर कैयो- "देख थारो काळजो नी माने तो....क्यू आपरेसण रे चक्कर माय रसे ?....ऊपरआळे री दया सू थारे एक सोनू जीवे है भगवान ... लांवो उमर करे तू वीमायईज आपरो ध्यान राख बी ... आपरी आस राख ....अर जिनगी घणी लांवी है स्वास- ... सेत आच्छी वणाय ले दोय—चार वरसां पछे आपरेसण वो ... लेसा...."

तुलछी पूठो सास भरावतां फेर कैयो—"थें सगळा आपरे

हिसाब सू सोचो अर म्है आपरे हिसाब सूं ! थें जाणो एक तो कोरो एकहीज होवे...अर एकै-एकै होवे इग्यारह ।"

म्है कैयो—"तूं ठीक कैवे पण एकै सू इग्यारह ताई पूगण खातर दो सूं दस तक री जात्रा तो करणी पडे के कोनी ?"

"करणी तो पडेईज ।" बिये हुंकारो भरयो ।

"तो पछे तू बी मन काठो करने सब सू पैली ।"

"पण म्हारा मायत ई खातर राजी को होवेनानी । ... तारली वार बी बिया म्हाने घणो डराय दियो हो .... ई खातर म्है असपताल सू पूठी नाठ आई ही ."

"थाने और की री चिन्ता करण री जरूत कोनी आपा काल सुबै होज चालसा"

"कठै ?"

"डागदर सा खने "

"की खातर "

"एकै रे मागै एको जोडण खातर . थारा इग्यारह बणावण खातर "

"साची ! "

"ग्रीर नी तो काई सूटी हमे तो ठीक है ...?"

"हू । "

"इया नई ओरे 'हूं" सू काम को चालेनी...."

"फेर काई चावो हो .."

"मुळक तो दे एक'र

"परने हटो थें तो घणा बेशरम होयग्या ।"

ओम मल्होत्रा

- जनम– एक जून, 1956
- शिक्षा– बी ए, एम ए (हिन्दी)
- बीथी चेतना बीकानेर सूं नाट्य कलाकार रै रूप में जुड़ाव
- राजस्थानी, हिन्दी अर पंजाबी में लगोलग लेखन
- मोकळी पत्र-पत्रिकावां में कथा-काव्य हास्य-व्यंग्य नाट्यसमीक्षावां प्रकाशित
- आकाशवाणी बीकानेर सूं कहाणियां, कवितावां, परिचर्चावां, हास्य-वार्तावां, हास्य-नाटक अर रूपक कार्यक्रम प्रसारित
- "उगतो सूरज ढळतो सूरज" राजस्थानी में पैलड़ो प्रकाशित कहाणी-संग्रै
  'बंधते बन्धन टूटते रिश्ते' हिन्दी कहाणी-संग्रै प्रकाशनाधीन
  सम्प्रति- आकाशवाणी बीकानेर में हिन्दी अनुवादक अर अस्थाई कम्पीयर